गलातियों

लेखकः

यीशु मसीह का प्रेरित पौलुस

समयः

लगभग 48 और 58 ईस्वी के बीच

विषयः

गलातिया प्रांत के कुछ चर्च (वह क्षेत्र जो आज तुर्किस्तान के नाम से जाता है) पौलुस की मेहनत का फल थे। 4:13-15 देखें प्रेरितों के काम अध्याय 14. लकाउनिया नामक क्षेत्र में इकुनियुम, दिरबे और लुस्त्रा नाम के शहर थे। इस क्षेत्र को कभी-कभी 'दक्षिण गलातिया' के नाम से भी जाना जाता था। बाद में कुछ यहूदी मत से आए मसीहियों ने जो यीशु मसीह के सेवक होने का दावा कर रहे थे, सुसमाचार में मिलावट करना शुरू कर दिया। वे सिखा रहे थे कि उद्धार के लिए मात्र यीशु पर विश्वास और परमेश्वर का अनुग्रह काफ़ी नहीं है। सभी यीशु पर विश्वास लाने वालों को मूसा के नियमशास्त्र का पालन करना ज़रूरी है। चाहे वे पहले यहूदी रहे हों या गैरयहूदी। जो कुछ पौलुस दूसरी जगह सिखाया करता था, वही उसने गलातिया में सिखाया था-वह यह कि उद्धार परमेश्वर की शर्तहीन कृपा (अनुग्रह) और विश्वास से मिलता है। अपने इस पत्र में वह यहूदी राष्ट्र के पिता अब्राहम का उदाहरण और दूसरे सबूत देकर सच्चाई को सामने रखता है। वह यह भी बताता है कि आत्मिक पूर्णता और पवित्र जीवन भी परमेश्वरीय कृपा और विश्वास से मिल सकती है। इस पत्र में कुछ विशेष शब्द हैं-विश्वास, धर्मी ठहराया जाना, अनुग्रह (शर्तहीन कृपा), आज़ादी, शरीर, आत्मा और क्रूस। कुछ मुख्य पद हैं-2:16-21.

---

1 पौलुस, यीशु मसीह का प्रेरित जिन्हें परमेश्वर पिता ने मरे हुओं में से जिलाया था, परमेश्वर पिता के द्वारा भेजा गया है, मनुष्यों द्वारा नहीं। 2यह पत्र गलातिया की उन सभी मण्डलियों के लिए उन भाइयों की ओर से भी है जो मेरे साथ हैं।

3हम सभी की ओर से तुम्हें स्वर्गिक पिता और प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और शान्ति मिले। 4यीशु, जिन्होंने हमारे पिता की इच्छा के आधार पर हमारे अपराधों के लिए अपने आप को दिया ताकि हमें इस बुरे संसार से छुड़ा लें, 5उन्हीं को प्रशंसा, सम्मान और स्तुति सदा मिलती रहे। ऐसा ही हो।

6मुझे आश्चर्य यह है कि इतनी जल्दी तुम यीशु मसीह से, जिन्होंने अपनी बड़ी कृपा से तुम्हें मुक्ति दी थी, मुड़कर एक अलग तरह की विचारधारा से प्रभावित हो रहे हो। 7वह सही सोच (शिक्षा) नहीं है। लेकिन कुछ लोग तुम्हें तकलीफ़ दे रहे हैं,

---

1:1 "प्रेरित"- मत्ती 10:2; रोमि. 1:1.

"मरे हुओं में से"- मत्ती 28:6. ध्यान दें कि पौलुस किस तरह से स्वर्गिक पिता परमेश्वर और यीशु को अलग - अलग दिखाता है। वे दोनों परमेश्वरत्व में हैं लेकिन दो अलग व्यक्ति भी हैं। मत्ती 3:16-17; यूहन्ना 17:1; आदि।

1:2 तुर्किस्तान में गलातिया एक बड़ा क्षेत्र था। इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबे (प्रे.काम 14:1-20) इसी राज्य में थे।

1:3 रोमि. 1:7 "असीम कृपा" इस चिट्ठी में मुख्य शब्द हैं- 1:3,6,15; 2:9,21; 3:18; 5:4; 6:18 पौलुस साफ़-साफ़ दिखाता है कि कृपा (अनुग्रह) के अच्छे संदेश का मतलब क्या है।

1:4 "हमारे...लिए"- यशा. 53:6,8,10; मत्ती 26:28; यूहन्ना 1:29; रोमि. 3:24-25; 1 कुरि. 15:3; 2 कुरि. 5:21; इब्रा. 9:28; 1 पतर. 2:24; 3:18.

"दुष्ट संसार"- "बुरा युग" - इच्छाएँ उद्देश्य आदर्श और इस युग (जैसा कि हर एक युग में है) दुष्ट हैं। देखें यूहन्ना 3:19; 7:17; रोमि. 3:19,23; 12:2; 1 यूहन्ना 2:16; 5:19. हम इस तरह से बचाए जाते हैं। हमारे अपराधों को हमसे ले जाने और दोष से बचाने के लिए, मसीह मरे (रोमि. 8:1)। जब हम मन बदलते हैं और उन पर भरोसा रखते हैं, वह हमें माफ़ करते हैं और याहवे परमेश्वर का आत्मा हम में आता है। तब हमें बल मिलता है, कि संसारिकता को त्यागें और परमेश्वर के लिए जियें। तभी मसीह हमें दुनिया की बाँधने वाली ताकत से शुद्ध करना शुरू करेंगे। आखिर में वह लौटेंगे और दुष्टता (पाप) से पूरी तरह छुड़ाएँगे। यीशु मसीह की क्रूस पर मौत जो अधर्मियों के लिए थी, इसकी नींव है। इसके बिना कोई मुक्ति नहीं है।

"छुड़ा लें"- यहाँ यीशु की मौत का एक खास कारण है। यह परमेश्वर का चुना हुआ तरीका था, ताकि दुनिया की दुष्टता और उन जंजीरों से लोगों को मुक्त करें जिसमें वे बन्धे हुए हैं। यीशु को रोमि. 11:26 में "छुड़ाने वाला" - कहा गया है। मत्ती 1:21; लूका 4:18; कुल. 1:13; तीतुस 2:14; इब्रा. 2:15 से मिलान कीजिए। हर वह बात जो लोगों को परमेश्वर से दूर रखती है, उन से वह मुक्त करते हैं - 5:1; यूहन्ना 8:36; रोमि. 6:17-18.

1:5 "स्तुति"- रोमि. 11:36; 16:27; इफ़ि. 1:6,12,14; 2:8-9; 3:21.

1:6 "मुक्ति दी थी"- रोमि. 1:6; 8:30 पर नोट्स देखें।

"मुड़कर"- वे सभी परमेश्वर की सच्चाई से मुकरने लगे थे। (जिन्होंने उन लोगों को बुलाया था)। क्योंकि दुष्ट लोगों ने उन्हें धोखा दिया था, लेकिन वे पूरी तरह से बदले नहीं थे।

"भिन्न प्रकार की विचारधारा"- शिक्षा यह थी कि यहूदी शास्त्र का पालन करने से मुक्ति मिलेगी (3:1-5; 4:9-11,21; 5:2-4; प्रे.काम 15:1,5 देखें)। पौलुस ने उन्हें मसीह का यह संदेश सुनाया कि मुक्ति मुफ़्त इनाम है और विश्वास से मिलती है। (2:16; 3:6-9,26; 5:5-6 तुलना करें। रोमि. 4:5; 6:23; इफ़ि. 2:8-9)। झूठे शिक्षक झूठा संदेश देते हुए आए और बताया कि मसीह पर विश्वास करना काफ़ी नहीं है। उन्हें मूसा द्वारा मिले शास्त्र में लिखी बातों को मानना है। यह भी कि मुक्ति के लिए खुद भी कुछ करना है। इस गलत शिक्षा को बहुत से गलातिया के मसीही स्वीकार कर रहे थे।

और मसीह के आनन्द के समाचार को भ्रष्ट कर रहे हैं। 8यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत उस अच्छे समाचार के अलावा कोई और संदेश सुनाए, तो उसे सज़ा मिले। 9जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, अब एक बार फिर कहता हूँ, यदि मेरे सुनाए हुए सुसमाचार से हटकर कोई सुसमाचार सुनाता है, तो वह सज़ा पाए।

10क्या मैं मनुष्य से प्रशंसा चाहता हूँ या जगत के स्वामी से? क्या मैं मनुष्यों को खुश करने की कोशिश कर रहा हूँ? क्योंकि यदि मैं अभी तक मनुष्यों को खुश करने की कोशिश कर रहा हूँ, तो मैं मसीह का सेवक हो ही नहीं सकता।

11लेकिन भाइयो-बहनो, मैं तुम्हें बताता हूँ कि जिस सु-समाचार को मैंने सुनाया था वह मनुष्य का नहीं है। 12इसलिए कि मैंने उसे मनुष्य से हासिल नहीं किया, न ही मुझे किसी ने सिखाया था, किन्तु मैंने इसे यीशु मसीह से सीखा था।

1:7 "आनन्द के समाचार"- गॉस्पल का मतलब है अच्छा संदेश। यह सिखाना कि मसीही लोगों को यहूदी नियमशास्त्र (व्यवस्था) का पालन करना है, अच्छा-संदेश नहीं था। (3:10; प्रे.काम 15:10)। आज भी दुनिया में बहुत से अच्छे-संदेश हैं, लेकिन ऐसी कोई शिक्षा कि यीशु को छोड़ किसी और तरीके से मुक्ति मिल सकती है, अच्छा संदेश नहीं है। ऐसी भी कोई शिक्षा जो किसी धार्मिक प्रथा, अच्छे काम या अपने प्रयास को मसीह से मिलने वाली मुक्ति में जोड़ना चाहती है, वह खुशी का संदेश है ही नहीं।

"भ्रष्ट"- बहुत कम ऐसे लोग हैं जो मसीह के संदेश को जैसा है, बिना बदले स्वीकार करते होंगे ।

1:8 "सज़ा मिले"- वह अच्छे संदेश के दिए जाने पर ज़ोर देता है, और उसमें बदलाव लाने वालों के भयंकर अपराध की तरफ़ भी इशारा करता है। उसे मालूम था कि खुद यीशु ने उसे मुक्ति का संदेश दिया था। (पद 11,12), यह भी कि यह संदेश, मुक्ति के लिए परमेश्वर की ताकत है। (रोमि. 1:16)। जो व्यक्ति इसे बदलने की कोशिश में है, वह लोगों से जानते हुए या बिना जाने बूझे मात्र एक मुक्ति के मार्ग को छीन रहा है। देखिए मत्ती 23:13; लूका 11:52. यह मानवता और स्वर्गिक पिता के खिलाफ़ अपराध है और इसे गलत ठहराना ही चाहिए। जो लोग इस अपराध के दोषी हैं, यदि वे अपनी गलती महसूस कर के उसे नहीं छोड़ेंगे तो दण्ड पाएँगे।

1:9 वह इस पर ज़ोर डालने के लिए दोहराता है। स्वर्गिक पिता के दिखाए हुए सत्य के साथ खिलवाड़ करने की दुष्टता के बारे में हमें शक नहीं करना चाहिए। तुलना करें प्रका. 22:18-19. झूठे शिक्षकों के बारे में अन्य पद मत्ती 7:15; 24:11; प्रे.काम 20:29-30; रोमि. 16:17-18; 2 कुरि. 11:13-15; 1 तीमु. 4:1-2; 2 तीमु. 4:3-4; 2 पतर. 2:1; यहूदा 4.

1:10 "क्या"- पौलुस के दुश्मनों ने उस पर यह दोष लगाया कि वह वही सिखाता था, जो लोग सुनना माँगते थे? पद 6-9 से दिखना चाहिए कि जो कुछ इसके विपरीत है, वही सच है। पौलुस हमेशा वही सिखाता था जो याहवे परमेश्वर ने उस पर प्रगट किया था। उसे इस बात का डर नहीं था कि किसी को वह बात बुरी लगेगी (प्रे. काम 20:20,26,27)। जहाँ तक उसके संदेश का सवाल था, वह यीशु के अलावा किसी और को खुश नहीं करना चाहता था। वह जानता था कि चाहे लोगों को कुछ पसन्द आए या न आए, सच्चे सन्देश को दिया जाना ज़रूरी है। यदि ऐसा रवैया न हो तो कोई मसीह का सच्चा सेवक नहीं हो सकता। लेकिन लोगों को मसीह में लाने और बढ़ाने के लिए वह लोगों को खुश करने के लिए तैयार था।

देखें रोमि. 15:1-3; 1 कुरि. 9:19-23; 10:33. हम इन दोनों ही बातों में पौलुस को अपना नमूना बनाएँ।

1:11 देखें 2 पतर. 1:16; इब्रा. 2:3-4; प्रे.काम 1:1-3,8; 2:32; यूहन्ना 7:16; 17; 12:49-50; लूका 24:45-48.

1:12 इफ़ि. 3:2-5; रोमि. 16:25-27; 1 कुरि. 15:3; प्रे.काम 22:14-15; 26:15-16. यह सब से ज़्यादा ज़रूरी है। पौलुस इस पर ज़ोर इसलिए डालता है, क्योंकि जो झूठे शिक्षक गलातिया गए थे वे इसका इन्कार कर रहे थे। वह किसी ऐसी बात को बाँट नहीं रहा था, जो उसे लोगों से मिली और वह उन्हें गलत समझ बैठा। स्वयं यीशु ने यह सच्चाई दी थी, इसलिए वह पूरे अधिकार से कह सकते थे। उसे यह ज़रूरत नहीं थी कि किसी और सुसमाचार से

13इसलिए कि यहूदी मत में मेरे आचार-
व्यवहार के विषय तुम ने सुना है, कि
मैंने असीमित रूप में, परमेश्वर के चर्च
(मण्डली, कलीसिया) को सताया और
नष्ट करने का प्रयत्न किया।
14मेरे अपने देश में और बहुत से लोगों
की तुलना में जो यहूदी मत के थे, मैं आगे
बढ़ चुका था। अपने पूर्वजों की परम्पराओं
से अधिक जोश उनकी तुलना में मुझ में
था। 15किन्तु जब परमेश्वर, जिन्होंने मुझे
अपनी बड़ी दया से माता के गर्भ से बुलाया
था, 16जिससे अपने बेटे को मुझ में प्रगट
करे ताकि मैं गैर यहूदियों में यह संदेश दूँ,
तब न तो मैंने अपनी इच्छा की परवाह
की, 17न ही मेरे से पहले नियुक्त किए गए
प्रेरितों से सलाह ली, किन्तु सीधे अरब
चला गया और फिर से वापस दमिश्क
आ गया।
18तीन साल बाद, मैं पतरस से मिलने
यरूशलेम गया और पन्द्रह दिन उसके
साथ रहा। 19वहाँ यीशु के भाई याकूब
को छोड़कर मेरी मुलाकात यीशु के किसी
और प्रेरित से नहीं हुयी। 20यह सब झूठ
नहीं, मैं परमेश्वर को उपस्थित जानकर
लिख रहा हूँ। 21इसके पश्चात् मैं सीरिया
और किलकिया इलाके में आया। 22किन्तु
मसीह में यहूदिया के चर्चों ने मेरा चेहरा
अब तक कभी नहीं देखा था। 23उन्हों ने
यह केवल सुना ही था कि जो हमें पहले
सताया करता था, अब वह स्वयं उस
संदेश को सुना रहा है, जिसे नाश करने
की कोशिश किया करता था। 24वे मुझ में
आए बदलाव के लिए परमेश्वर की बड़ाई
किया करते थे।

तुलना कर के यह जानें कि यह सच है या नहीं। लेकिन हमें अपने सुसमाचार की तुलना पौलुस के सुसमाचार से करनी चाहिए। यदि यह उसके समान नहीं तो यह सच्चा सुसमाचार नहीं। देखें 2 कुरि. 1:12-14.

1:13-14 प्रे.काम 7:58; 8:1-3; 9:1-2; फ़िलि. 3:4-6; 1 तीमु. 1:13.

1:15 "अपनी बड़ी दया"- पद 6 पौलुस के जन्म को बहुत बाद, याहवे परमेश्वर से उसे यह बुलाहट मिली थी, ताकि वह उस उद्देश्य को पूरा करे जिसके लिए उसे जन्म से अलग किया गया था।

"माता के गर्भ से"- यिर्म. 1:5 और यूहन्ना 15:16 से मिलान करें।

1:16 पौलुस पर मसीह को प्रगट किया गया था (प्रे.काम 9:3-4; 1 कुरि. 9:1)। यहाँ वह स्वयं में मसीह के प्रगट किए जाने के परमेश्वर के इरादे की बात करता है। पौलुस समझ गया था कि मसीह उस में रहते हैं, काम करते हैं ताकि वह दूसरे लोगों को मसीह के विषय बताए (2:20; 2 कुरि. 4:10-11; कुल. 1:29)। सभी विश्वासियों के लिए यह परमेश्वर का उद्देश्य है।

"गैर यहूदियों"- 2:7; प्रे.काम 22:21; 26:17-18; इफ़ि. 3:8. बाईबल में "अन्य जाति" - का अर्थ है 'गैर यहूदी'।

1:17 यही वह स्थान है जहाँ वह अरब की यात्रा के बारे में कहता है। प्रे.काम 9:19-22 में बतायी सभी घटनाओं के समय ही में यह घटा होगा। पौलुस यह नहीं बताता कि वहाँ वह क्यों गया था। ज़रूर वह प्रार्थना, मनन और संगति के लिए वहाँ गया होगा। उसने किसी इन्सान की सलाह नहीं स्वर्गिक पिता की सलाह ली (पद 16)।

1:18-19 प्रे.काम 9:26-30 । शायद उस समय दूसरे प्रेरित यरूशलेम में नहीं थे। पतरस और याकूब ने उसका स्वागत किया, तो ज़रूर दूसरे लोगों ने जो उनके साथ थे, उसका स्वागत किया होगा।

1:20 यह बात वह बड़ी गंभीरता से करता है, क्योंकि सच्चे सुसमाचार का स्वीकार किया जाना खतरे में था। अगर उन्हों ने विश्वास न किया होता तो वे अपने किए हुए को जारी रखते (पद 6)।

1:21 प्रे.काम 9:30; 11:25-26. तारसुस किलकिया में (तुर्किस्तान का एक भाग) था। अन्ताकिया सीरिया में था।

1:22 पौलुस का काम दूसरे इलाकों में था। उसने बहुत कम समय यरूशलेम में बिताया। इसलिए यहूदिया के अधिकांश लोग उसे नहीं जानते थे।

1:23-24 वे पौलुस में बदलाव को जानते थे, लेकिन इसके लिए उसकी बड़ाई नहीं करते थे। जिस परमेश्वर ने उसे बदला था, वे उसकी बड़ाई करते थे। पौलुस यही चाहता भी था। (1 कुरि. 3:4-7; इफ़ि. 1:6,12,14; फ़िलि. 1:11)

2 चौदह वर्ष के बाद मैं तीतुस और
बरनबास के साथ फिर से यरूशलेम
गया। 2स्वर्गिक मार्गदर्शन पाने के बाद
मैंने ऐसा किया था, ताकि मैं उनके सामने
उस सुसमाचार को रख सकूँ, जिसे मैंने गैर
यहूदियों को सुनाया था। ऐसा मैंने आदरणीय
लोगों के साथ अकेले में किया, ताकि मेरी
दौड़ (मेहनत) बेकार न ठहरे। 3यहाँ तक
कि तीतुस जो यूनानी था और मेरे साथ था,
खतना कराने के लिए मजबूर किया गया।
4यह उन झूठे भाइयों के कारण हुआ जिन्हें
गुप्त तरीके से लाया गया था। वे मसीह
यीशु में जो हमारी आज़ादी थी, उससे हमें
हटाने के लिए, लुके-छुपे जासूसी कर रहे
थे। 5हम ने उनके हाथों में एक क्षण के
लिए भी अपने आप को सुपुर्द नहीं किया,
ताकि खुशी के संदेश की सच्चाई तुम्हारे
साथ बनी रहे।

6जो लोग कुछ समझे जाते थे उन से
मुझे कुछ भी हासिल न हुआ-वे कैसे थे

2:1-10 पहले अध्याय के शुरू किए गए विषय को वह जारी रखता है। वह वहाँ कहता है कि स्वर्गिक पिता ने उसे प्रेरित होने के लिए बुलाया और उसे खुशी की खबर दी। यहाँ वह कहता है कि दूसरे प्रेरितों ने उसे प्रेरित कबूल किया और पहचाना, कि जिस संदेश को वह दे रहा था, वही उनका भी था।

"तीतुस"- 2 कुरि. 2:13; 7:6; 2 तीमु. 4:10; तीतुस 1:4.

2:1 "बरनबास"- प्रे.काम 4:36; 9:27; 11:25,30; 12:25; 13:2; 15:2.

2:2 "स्वर्गिक मार्गदर्शन"- परमेश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान।

"अकेले में"- सुसमाचार के बारे में यरूशलेम की कलीसिया के अगुवों के साथ वह किसी वाद-विवाद में नहीं फँसना चाहता था। वह इस आशा में था, कि अकेले में वे सुसमाचार के विषय में पूरी तरह उस से सहमत हो जाएँगे। उसके बाद इस के निष्कर्ष को जनता के सामने लाया जाएगा।

"ताकि...ठहरे"- पौलुस को इस बात की शंका नहीं थी कि उसके पास का सुसमाचार सच्चा है भी या नहीं। उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसके पास था। (1:12)। उसे डर था कि यदि दूसरे प्रेरित उसका और उसके संदेश का विरोध करेंगे तो गैर यहूदियों के बीच उसका काम बर्बाद हो जाएगा।

2:3 उन दिनों खतना महत्वपूर्ण चर्चा का विषय बना रहता था - यह पद 12; 5:2-3,6,11; 6:12-15; प्रे.काम 15:1-5; रोमि. 4:9-16. सवाल यह था कि क्या गैर यहूदी मसीही लोगों को यहूदी धर्म स्वीकार कर के, खतना कर के, मूसा द्वारा दिए गए नियमशास्त्र को मानना है? पौलुस और दूसरे प्रेरितों का उत्तर था "नहीं"। तीतुस पर इस बात की जाँच की गयी। वह गैर यहूदी था। यरूशलेम में प्रेरितों ने एक 'सच्चे विश्वासी' की तरह उसे ग्रहण किया था, हालाँकि उसका खतना नहीं हुआ था।

2:4 ये "झूठे भाई" यहूदी थे, जिन्हें यरूशलेम के विश्वासियों ने अपने बीच में स्वीकार किया था। इन यहूदियों का यह लक्ष्य था कि सारे यीशु के मानने वालों को (चाहे यहूदी या गैर यहूदी) मूसा के नियमशास्त्र रीति विधियों में लाएँ। खास सवाल तो यह था कि लोग मुक्ति कैसे पाएँ - नियमशास्त्र को मानने से या याहवे परमेश्वर की असीम कृपा से? उत्तर साफ़ है - 5:1-4; प्रे.काम 13:38-39; 15:10-11; रोमि. 3:24-28; 6:14; 7:4.

2:5 पौलुस यह जानता था कि एक पल भी यदि झूठी शिक्षा को अपनाया जाए तो गलातिया की कलीसिया (चर्च) को बड़ी हानि होगी। कुछ भी करते समय वह इस बात का ध्यान रखे हुए था, कि दूसरों पर क्या असर होगा।

2:6-9 पौलुस लोगों को ऊपर उठाने के पक्ष में नहीं था, चाहे वह स्वयं हो या और कोई- 1 कुरि. 3:5,22,23. उसके लिए खास बात यह नहीं थी कि लोग क्या लगते हैं, या उनके पास कितने बड़े अवसर हैं या ऊँचे पद पर हैं या दूसरों के सामने क्या इज़्ज़त है। उसके लिए खास मुद्दा यह था कि जो वचन उसे दिया गया, उसे वे वैसा ही स्वीकार करेंगे या नहीं। वह गलातिया की मण्डलियों को सूचना दे सका कि पतरस, याकूब और यूहन्ना जो यरूशलेम के चर्च के अगुवे के, सुसमाचार के मतलब के सम्बन्ध में उसके साथ सहमत थे (पद 9)।

7,8 और 9 पदों में बिना खतना वाले गैर यहूदियों और खतना वाले यहूदियों की तरफ़ इशारा करते हैं। उन दिनों में इसी तरह की भाषा

इस का भी मुझ पर कोई असर नहीं हुआ, क्योंकि परमेश्वर किसी की भी तरफ़दारी नहीं करते हैं। 7इसके विपरीत उन्हों ने देखा, कि खतना रहित लोगों को खुशी का संदेश देने की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी गयी है जिस तरह से खतना वालों की ज़िम्मेदारी पतरस को दी गयी थी। 8जो पवित्र आत्मा पतरस की प्रेरिताई सेवा में कार्य कर रहा था, वही प्रभावशाली तरीके से गैरयहूदियों में मेरे द्वारा कार्य कर रहा था। 9याकूब, कैफ़ा और यूहन्ना जो खंभे समझे जाते थे, जब उन्हों ने मुझे प्राप्त अनुग्रह (मेरे बदलाव) को देखा तब बरनबास और मुझे सहभागिता का दाहिना हाथ दिया। उन्हों ने यह सलाह मान ली कि हम गैर यहूदियों के पास जाएँ और वे यहूदियों के पास, 10परन्तु वे चाहते थे कि हम गरीबों का ध्यान रखें। मैं भी वही करने के लिए तैयार था।

11जब पतरस अन्ताकिया आया, मैंने उसके सामने उसका विरोध किया, क्योंकि वह दोषी था। 12इसलिए कि याकूब की ओर से कुछ लोगों के आने से पहले वह गैरयहूदियों के साथ खाना खाता था। किन्तु जब वे वहाँ पहुँचे, खतना वालों के डर से उसने अपने आपको अलग कर लिया। 13दूसरे यहूदी भी उसके साथ धोखे में पड़ गए, यहाँ तक कि बरनबास भी उसी कपट

लोग इस्तेमाल करते थे।

2:10 जब पौलुस गैरयहूदियों तक खुशी के संदेश को ले गया, दूसरे प्रेरित नहीं चाहते थे कि वह यहूदिया में यहूदी मसीहियों की शारीरिक आवश्यकताओं को भूल जाए। पौलुस खुद वहाँ के गरीबों की ज़रूरत पूरा करने में दिलचस्पी लिया करता था। प्रे.काम 24:17; रोमि. 15:25-28; 1 कुरि. 16:1-4; 2 कुरि. 8; 9. एक महत्वपूर्ण विषय के बीच ही में गरीबों की मदद का मुद्दा दिखाता है, कि इस सेवा को कितना महत्व का समझा गया। देखें निर्ग. 23:11; व्यव. 15:7-8; भजन 41:1; नीति. 14:31; 19:17; 21:13; 29:7; 31:9; मत्ती 19:21; 2 कुरि. 9:9.

2:11-21 इस हिस्से में पौलुस अपनी प्रेरिताई के पद के पक्ष में कहता है। वह जानता था कि मसीह ने सुसमाचार को उस तक पहुँचाया था। इसलिए खुले आम हर एक उस जन के खिलाफ़ बोलने या करने के लिए तैयार रहा करता था, ताकि विवाद के मुद्दे पर प्रकाश डाले। शुरू के प्रेरितों में पतरस अगुवा था। वह बिना कमज़ोरी का नहीं था। एक समय आया जब सुसमाचार की खातिर पौलुस ने पतरस को डाँटा। 2:11 हमें यह नहीं मालूम कि पतरस अन्ताकिया कब आया या क्यों आया। उस समय अन्ताकिया, एशिया का सब से बड़ा शहर था और गैर यहूदी मसीहियों का केन्द्र (प्रे.काम 11:19-26; 13:1-3)।

2:12 "याकूब...आने"- का मतलब यह नहीं होगा कि याकूब ने इन लोगों को भेजा था। इसका सिर्फ़ यह अर्थ हो सकता है कि वह यरूशलेम से वहाँ गया, जहाँ याकूब एक अगुवा था। प्रे. काम 15:13,20,24 से मिलान करें। पतरस और यूहन्ना के साथ मिलकर याकूब ने पहले ही पौलुस को अपनी दोस्ती का हाथ दिया था, यह दिखाने कि पौलुस द्वारा दिए जाने वाले संदेश से वे सहमत हैं (पद 9)। जो लोग अन्ताकिया आए थे, पौलुस उन्हें "खतने वाले"- कहता है। वे यहूदी मत में से आए मसीही थे जो यह सिखा रहे थे कि जिन यहूदियों ने मसीह को अपनाया है, उन्हें यहूदी मत के नियमों और विधियों को मानते रहना चाहिए।

उनके हिसाब से यदि गैर यहूदी धर्मों से मसीह में आए लोग जब तक यहूदियों की प्रथाओं को मानते नहीं, तब तक उन्हें मिलकर साथ में खाना भी नहीं खाना चाहिए। पतरस यह जान गया था, कि उसका रवैया गलत था (प्रे.काम 10:27-29; 11:2-17)। इसलिए उसने अन्ताकिया में गैरयहूदी मत से आए विश्वासियों के साथ खाना खाया । लेकिन जब खतना वाला समूह वहाँ आया तब वह उन से किनारा करने लगा।

2:13 "धोखे में पड़ गए"- ये शब्द पौलुस ने पतरस के व्यवहार को देख कर कहे। ऐसा इसलिए था क्योंकि पतरस एक बात को मानता था (यह कि गैर मतों से आए हुए मसीह के लोगों के साथ खाना ठीक है।) लेकिन उसका बर्ताव उसके विश्वास के विपरीत था।

में बह गया।

14जब मैंने यह देखा, कि वे सच्चे संदेश (सुसमाचार) के सत्य के अनुसार बर्ताव नहीं कर रहे हैं, सब के सामने मैंने पतरस से कहा, "यहूदी होकर यदि तुम गैर यहूदियों की तरह जीओगे , यहूदियों के समान नहीं, तो तुम और गैर यहूदियों को यहूदियों की तरह जीने के लिए क्यों मजबूर करते हो?

15हालाँकि हम जन्म से यहूदी हैं और गैरयहूदियों में से नहीं, 16तौभी यह जानकर कि इन्सान नियमशास्त्र (व्यवस्था) के अनुसार काम करने से नहीं, "बल्कि सिर्फ़ यीशु मसीह पर विश्वास लाने से धर्मी (क्षमा किया हुआ और सिद्ध) ठहरता है। हम ने भी यीशु मसीह पर विश्वास किया ताकि हम भी यीशु पर विश्वास करने से धर्मी (सज़ामुक्त और सिद्ध) ठहराए जाएँ न कि नियमशास्त्र के अनुसार। क्योंकि नियमशास्त्र के अनुसार करने वाला कोई भी इन्सान सिद्ध (धर्मी) साबित नहीं होगा।

17हम जो मसीह में धर्मी और परमेश्वर के सामने पूर्ण ठहरना चाहते हैं अगर खुद ही गुनाहगार निकले, तो क्या मसीह ने हमें गुनाह करने के लिए उभारा है? बिल्कुल नहीं 18क्योंकि जो कुछ मैंने ढा दिया अगर उसे फिर बनाऊँ, तो खुद मैं ही परमेश्वर के कानून को तोड़ने वाला हुआ। 19क्योंकि मैं नियमशास्त्र ही के द्वारा मर गया, ताकि

2:14 पौलुस जान गया कि स्थिति गंभीर थी। पतरस सच्चाई को जानता था लेकिन उसके हिसाब से चल नहीं रहा था। उसके कार्य सच्चे सुसमाचार के बारे में सवाल उठा रहे थे। ऐसा दूसरों के शब्दों से भी हुआ था (प्रे. काम 15:1,5)।

"गैर ...जीओगे"- पौलुस का मतलब यह था कि पतरस खुद तो यहूदियों की रीति विधियों और नियमों का पालन नहीं कर रहा था।

"मजबूर"- पतरस अपने शब्दों से गैरयहूदियों पर दबाव नहीं डाल रहा था, लेकिन अपने काम से। इसलिए सच्चाई के कारण पौलुस उसे डाँटता है। पद 15-21 में वह सुसमाचार का मतलब बतलाता है। इस पूरी चिट्ठी में जो कुछ भी लिखा है, वह पदों में लिखी सत्य की नींव पर है।

2:15 पौलुस एक यहूदी था और उसी दृष्टिकोण से बोलता है।

2:16 वह कहता है कि यहूदी मसीही अगुवों ने सीधी सादी एक खास सच्चाई सीख ली थी - वह यह कि मूसा से मिले नियमशास्त्र की बातों को मानने से मुक्ति नहीं मिलती है। हर एक जन चाहे वह यहूदी हो या गैर यहूदी, मसीह पर विश्वास से धर्मी ठहराया जाता है (प्रे.काम 13:38-39; रोमि. 3:24-26,28,30; 5:1)। ऐसी कोई भी कोशिश कि यहूदी धार्मिक बातों को मानना ज़रूरी है, सुसमाचार के निचोड़ पर एक हमला है। ऐसा आज भी है। ऐसी कोई शिक्षा कि किसी धार्मिक नियम को मानने से मुक्ति मिलेगी या मुक्ति में सहायक होगी, सरासर झूठ है। कोई भी ऐसी शिक्षा कि हमारी मेहनत, अच्छे काम और इन्सानी योग्यता से उद्धार मिलता है, गलत है।

2:17 ऐसे लोगों के लिए जिनके पास सच्चाई के बारे में पूरी समझ नहीं है, पौलुस, सुसमाचार के खिलाफ़ संभावित शिकायत के लिए जवाब देता है। यहाँ भाषा काफ़ी अटपटी है, लेकिन यह संभव है कि यह शिकायत वही है, जैसी रोमि. 6:1,15 में है। वह मान लेता है कि जो बचाए गए हैं (वह खुद भी) अपराधी हैं। क्या इसका मतलब यह हुआ कि मसीह पर विश्वास करना दुष्टता को बढ़ावा देना है? उत्तर है "बिल्कुल नहीं" (रोमि. 3:30 में इस बात पर नोट्स देखें। रोमि अध्याय 6 और नोट्स देखिए।

2:18 इसका अर्थ लगता हैः यह इन्कार करने के बाद कि मुक्ति के लिये परमेश्वर ने जो व्यवस्था मूसा के द्वारा दी थी, यदि मैं (या और कोई) उसी को फिर से मुक्ति का एक ज़रिया मानें, तो मैं दोषी हो जाता हूँ और व्यवस्था भी मुझे दोषी ठहराएगी। इब्रा. 2:1-4; 6:4-6; 10:26-29; 12:25.

2:19 "मर गया"- रोमि. 7:1-4 नियम शास्त्र को मुक्ति के लिए आधार बनाने से दुष्टता को बढ़ावा नहीं मिलता है। इस से विश्वासी को हिम्मत मिलती है, "परमेश्वर के लिए जीऊँ"। नियम शास्त्र, बजाए जीवन देने के, मौत का हथियार बन गया (रोमि. 7:9-11; 2 कुरि. 3:6)।

परमेश्वर के लिए जीऊँ। 20मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं नहीं, लेकिन मसीह मुझ में जीवित हैं। इसलिए इस देह में जो जीवन मैं जी रहा हूँ, यह परमेश्वर के बेटे यीशु की विश्वासयोग्यता की वजह से है, जिन्होंने मुझ से प्यार किया और अपने आप को मेरे लिए दे दिया। 21 मैं परमेश्वर की असीमित कृपा को नज़रअन्दाज़ नहीं करता हूँ, क्योंकि अगर नियमशास्त्र से धर्मी (सिद्ध) ठहराया जाना होता, तो मसीह का मरना बेकार हुआ होता।

3 हे मूर्ख गलातिया वासियो, तुम्हें किसने मोह लिया है, कि तुम सत्य को न मानो। यीशु बिल्कुल तुम्हारी आँखों के सामने ही क्रूस पर चढ़ाए हुए दिखाए गए थे। 2मैं तुम से एक बात पूछना चाहता हूँ: क्या पवित्र आत्मा तुम ने नियमशास्त्र का पालन करने से पाया था, या विश्वास से सुनने के द्वारा? 3क्या तुम इतने मूर्ख हो कि पवित्र आत्मा में शुरूआत करने के बाद अब क्या अपनी इच्छा के अनुसार करने से सिद्धता को प्राप्त कर सकोगे? 4क्या तुम ने इतना सब कुछ

2:20 "मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया"- केवल पौलुस के लिए नहीं, लेकिन हर एक के लिए यह सच है। रोमि. 6:3-8 देखें। मसीह उनकी जगह मरे ओर यीशु की मौत को लोगों (विश्वासियों) की मौत समझते हैं। एक नए तरीके के जीवन के लिए यही एक रास्ता है। आत्मिक जीवन के लिए, विश्वासी ज़रिया नहीं है। मसीह ही स्त्रोत हैं। यह जीवन जीने के लिए विश्वासियों की देह और दिमाग से नया जीवन नहीं आता है, लेकिन उन में रहने वाले मसीह से। रोमि. 8:1-10 से तुलना करें। नया जीवन परमेश्वर में विश्वास से जिया जा सकता है। सच्चा मसीही जीवन यीशु पर भरोसा रखने से शुरू होता है और इसी तरह जारी भी रहता है 2 कुरि. 5:7; कुल. 2:6-7)। जो कुछ पौलुस दूसरों को करने के लिए कहता है, वह खुद भी करता है रोमि. 6:11.

"अपने...दिया"- 1:4; रोमि. 5:6-8.

2:21 यह शिक्षा कि नियम शास्त्र (यहूदी धर्म व्यवस्था) के मुताबिक करने से मनुष्य मुक्ति पा सकेगा, मसीह की मौत को बेफ़ायदा और बिना काम का बना देती है। इसलिए इसे रद्द करने में पौलुस को कोई मुश्किल नहीं। यदि लोग परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को अपने करने के द्वारा सुधार सकते तो यीशु को आकर मरने की क्या ज़रूरत थी? यह साफ़ ज़ाहिर है - कृपा के द्वारा मुक्ति है इसके अलावा कोई तरीका नहीं है।

3:1 यह निरी बेवकूफ़ी है यदि यह विश्वास करें कि यीशु बेमतलब मर गए। लेकिन झूठे मसीही इन मसीहियों को ऐसी स्थिति में ढकेलने की कोशिश कर रहे थे। ऐसा तो वे नहीं कह रहे थे कि यीशु यूँ ही मर गए। लेकिन यीशु की कुर्बानी के साथ नियम शास्त्र को मानने की ज़रूरत को दिखाकर वे अप्रत्यक्ष तरीके से सिखा रहे थे - कि यीशु की मौत की कोई ज़रूरत नहीं है। जब पौलुस ने उनके बीच वचन दिया था, तो ऐसा नहीं सिखाया था।

3:2 वह अपने अनुभव को एक सबूत रखकर कहता है, कि उसने यह सच्चाई सिखायी थी। जब उन्हों ने उसके दिए गए सत्य पर भरोसा किया, उन्हों ने परमेश्वर के आत्मा को पाया (तुलना करें 4:6; इफ़ि. 1:13; प्रे.काम 10:44; रोमि. 8:15)। परमेश्वर ने उनके नियम शास्त्र के अनुसार करने के आधार पर आत्मा को उनके अन्दर रहने के लिए नहीं दिया था। विश्वास से ही उन्हों ने उसे हासिल किया था। किसी ने भी आज तक रीति विधि और प्रथा को मानने से परमेश्वर के आत्मा को प्राप्त नहीं किया था। ध्यान दें, लोगों के पास परमेश्वर का आत्मा यों ही नहीं होता है। मसीह पर विश्वास से इसे कबूल किया जाता है। यूहन्ना 14:17 देखें।

3:3 जब उन्हों ने मसीह पर भरोसा किया, उन्हों ने वह अनुभव किया जो परमेश्वर कृपा से प्राप्त होता है। क्या यह सोचना मूर्खता नहीं थी कि हमारी कोशिश नियम और नियमशास्त्र की रीतिविधियाँ उन्हें आगे ले जा सकती है? या हमें भी ले जा सकती है।

3:4 उनके बारे में उसको शक है। क्या झूठे शिक्षक अपनी कोशिशों में कामयाब होंगे? क्या वहाँ के मसीही एक ऐसे बिगड़े संदेश को कबूल करेंगे? क्या वे उन पुरस्कारों को खो देंगे जो उनके क्लेश उन्हें दिलवा सकते थे? उनके बर्ताव से उसे आश्चर्य और शक होता है (4:11,20)।

बेकार ही सहा? यदि हाँ, तो सब व्यर्थ ठहरा,
5जो तुम्हें पवित्र आत्मा देते हैं, और तुम्हारे
बीच में अद्‌भुत कार्य करते हैं क्या वह नियम
शास्त्र के आधार पर करने के कारण करते
हैं या तुम्हारे विश्वास से सुनने के कारण?

6जैसा अब्राहम ने भरोसा किया और वह
उसके लिए धार्मिकता गिना गया। 7इसलिए
यह समझ लो, कि वे जो विश्वास करते
हैं, वे ही अब्राहम के बेटे-बेटियाँ हैं। 8यह
बात ध्यान में रखकर कि विश्वास द्वारा
गैरयहूदियों को सिद्ध या सज़ा मुक्त ठहराया
जाएगा, सुसमाचार की पहले ही से यह
कहते हुए घोषणा की थी "सभी राष्ट्र तुम
में आशीष पाएँगे" 9इसलिए जिनके पास
विश्वास है वे विश्वास करने वाले अब्राहम
के साथ आशीषित हैं।

10इसलिए कि जितने नियमशास्त्र के
कामों पर निर्भर हैं, वे सज़ा के आधीन हैं।
क्योंकि यह लिखा है "हर एक वह जन
दण्डित है जो नियमशास्त्र में लिखी हर
एक बात में बना नहीं रहता है।" 11परन्तु
यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की दृष्टि में कोई
भी इसलिए खरा और निर्दोष नहीं ठहरता
क्योंकि वह नियमों का पालन करता है।
इसलिए कि धर्मी ठहराया हुआ व्यक्ति
विश्वास से जीवित रहेगा। 12नियमशास्त्र
का विश्वास से कोई सम्बंध नहीं हैं, किन्तु
"जो व्यक्ति उनका पालन करता है उनके

3:5 वह पद 2 के प्रश्न को अलग रूप में दोहराता है। झूठी शिक्षा नकारने के लिये जो उन्हों ने सुना था, वह चाहता था कि वे सोचें और सत्य के ज्ञान का उपयोग करें।

3:6 "अब्राहम"- पौलुस का उद्देश्य यह है कि शास्त्र दे यह सबूत है कि परमेश्वर बिना नियमशास्त्र के विश्वास के आधार पर निर्दोष ठहराते हैं।

"धार्मिकता"- उत्पत्ति 15:6; रोमि. 4:3.

3:7 रोमि. 4:11-12,16,17 यहाँ "बेटे-बेटियाँ" का अर्थ है आत्मिक वारिस।

3:8 उत्पत्ति 12:3; 18:18; 22:18.

"सुसमाचार"- रोमि. 3:10; 4:3.

"तुम में आशीष"- देखें उत्पत्ति 12:3; 18:18; 22:18.

3:9 आज हर जगह लोग यह सोचते हैं कि धार्मिक रीति-विधियों को करने से परमेश्वर की आशीषों को हासिल किया जा सकता है। वे सोचते हैं कि परमेश्वर द्वारा मूसा को दिए गए नियमों को पूरा करने से परमेश्वर की भलाईयों को हासिल किया जा सकता है। पौलुस दिखाता है कि ये आशीषें भरोसे से मिलती हैं, अपनी कोशिश से नहीं। आशीषों पर नोट्स देखें उत्पत्ति 12:1-3; गिनती 6:23-27; व्यव. 28:3-14; भजन 1:1; 119:1; मत्ती 5:3-12; प्रे. काम 3:26; इफ़ि. 1:3.

3:10 व्यव. 27:26 देखिए। नियमशास्त्र को पूरा करने से लोग उस आशीष को नहीं पाते जिसकी वे उम्मीद करते हैं। इसका उल्टा होता है। वे दोषी ठहराए जाते हैं। ऐसा कैसे हो सकता है? नोट्स देखें निर्ग. 19:5-6,8,21-25. फ़िलि. 3:6 में पौलुस ने कहा था कि उसकी "कानूनी धार्मिकता" बिना किसी खोट के है। इसलिए कि वह दस आज्ञाओं को मान न सका, आज्ञा तोड़ने वाले को मिलने का असर उस पर भी था । (रोमि. 7:7-14)। यदि एक व्यक्ति परमेश्वर के किसी एक नियम को भी तोड़ता है तो वह पूरे नियमशास्त्र को तोड़ने वाला हुआ (याकूब 2:10-11)। इसलिए जिन लोगों ने स्वर्गिक पिता के नियमों के आधार पर जीने की कोशिश की उन पर दण्ड आ पहुँचा।

3:11 यह तीन जगहों में से पहली वह जगह है जहाँ हबक्कू 2:4 न्यू टैस्टामैन्ट में आया है (रोमि. 1:17; इब्रा. 10:38)। सृष्टिकर्ता पर भरोसा रखने से इन्सान निर्दोष ठहराया जाता है, न कि नियम शास्त्र के अनुसार करने से।

3:12 लैव्य. 18:5 नियमशास्त्र और विश्वास दो अलग-अलग सिद्धान्त हैं। विश्वास परमेश्वर पर भरोसा रखता है, मुक्ति और हमेशा की जिन्दगी एक इनाम की शक्ल में पाता है। नियमशास्त्र उसी व्यक्ति को ज़िन्दगी का वायदा दे देता है, जो नियमशास्त्र के सभी नियमों का पालन करता है। जो व्यक्ति सिर्फ़ कोशिश करता है कि वह नियमों का पालन करता है, उसी के लिए नियम/आज्ञाएँ जीवन की प्रतिज्ञा करते हैं। नियमशास्त्र मौत और सज़ा को लाता है (पद 10; रोमि. 3:19-20)।

द्वारा उम्र भर सुख का स्वाद चखेगा"
13मसीह ने हमें नियमशास्त्र के शाप से
आज़ाद किया है (इसलिए कि लिखा है,
कि प्रत्येक वह व्यक्ति जो क्रूस पर चढ़ाया
जाता है शापित है") 14ताकि अब्राहम की
आशीष यीशु द्वारा गैर यहूदियों तक पहुँचे
जिससे हम विश्वास द्वारा पवित्र आत्मा
की प्रतिज्ञा पाएँ।

15भाइयो-बहनो, मैं लोगों की जीवन शैली
की बात करता हूँ: एक बार जब मनुष्य
द्वारा बाँधी वाचा की पुष्टि हो जाती है, कोई
भी उसे खारिज नहीं करता, न ही उसमें
कुछ जोड़ता है। 16अब्राहम और उसके
वंश से प्रतिज्ञाएँ की गयी थीं। यहाँ "वंशों
से" नहीं लिखा है, किन्तु "तुम्हारे वंश से"
जिसका अर्थ है एक व्यक्ति, जो मसीह
हैं। 17मैं यह कहता हूँ कि नियमशास्त्र जो
430 वर्ष बाद दिया गया, वह मसीह में
पहले से सिद्ध किया गया, ताकि प्रतिज्ञा
सच ठहरे। 18इसलिए कि यदि विरासत
नियमशास्त्र से मिलती है, तो यह प्रतिज्ञा
पर आधारित नहीं हुयी। परन्तु परमेश्वर

3:13 देखें कि यीशु दुष्टता में पड़े लोगों के लिए क्या करना चाहते हैं। उन्हों ने हमारी जगह ले ली और तोड़े गए नियमशास्त्र के परिणाम (शाप) को स्वीकार किया। उन्हों ने हमारे अपराधों के लिए सज़ा ग्रहण की। तुलना करें रोमि. 5:6-8; 2 कुरि. 5:21; 1 पतर. 3:18. छुड़ाए जाने पर नोट्स भजन 78:35; और मत्ती 20:28 में देखें।

"क्रूस"- व्यव. 21:22-23. पुराने समय में इस्त्राएल में अधिकारीगण अपराधी लोगों को टाँग देते थे और पेड़ पर लटकाकर मार देते थे। इस तरह उन्हें लोगों के सामने लज्जित किया जाता था। इसलिए यीशु हमारे अपराधों के लिए मरे और क्रूस की शर्मनाक मौत को हमारे लिए सह लिया। देखें प्रे.काम 5:30; 10:39; 13:29; 1 पतर. 2:24. हमें वह फ़ाँसी की सज़ा मिलनी चाहिए थी।

3:14 उन्हों ने अपने दुखों में हमारी आशीषों के बारे में सोचा। उनके मन में हमारी भलाई के विचार इतने अधिक थे, कि दण्ड और क्रूस की मौत को कुछ भी न समझा। मसीह के सभी विश्वासी नियमशास्त्र के शाप से छुड़ाए गए हैं (रोमि. 8:1)। अब्राहम के द्वारा जिस वायदे को दिया गया था, वे उसके वारिस हो जाते हैं (देखें पद 8,9)।

"पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा"- लूका 24:49; यूहन्ना 14:16-17; प्रे.काम 1:4-5; 2:39. यहाँ की शिक्षा पर ध्यान दें। जिन लोगों ने परमेश्वर की आत्मा को पाया है, उन्हीं तक याहवे परमेश्वर की आशीष आती है। विश्वास से हम उस आत्मा को पाते हैं। (पद 2,5; लूका 11:13; इफ़ि. 1:13)। यह सब "मसीह यीशु" - से मिलता है, किसी और के द्वारा नहीं। इस पद से यह साफ़ है कि मसीह पर विश्वास लाने से पहले हमारे पास उनका आत्मा नहीं था।

3:15-17 सामान्यतः यह लोगों के बीच करार में होता है - उन होने वाली बातों के लिये, जिसके बनाने के बाद उन्हें उस से कोई नुकसान नहीं होता। पौलुस यहाँ कहता है कि अब्राहम के साथ बाँधी गयी वाचा में भी ऐसा था। वर्षों बाद जब मूसा के माध्यम से नियमशास्त्र दिया गया, तो इसके ऊपर कोई असर नहीं चल सका।

3:16 उत्पत्ति 12:7; 13:15; 24:7. पौलुस का मतलब है जो वायदा परमेश्वर ने अब्राहम को दिया, मसीह उसके हकदार थे। वह अब्राहम के वंश में से थे। (मत्ती 1:1)। मसीह के लोग, तभी अब्राहम के आशीषों के हकदार हैं, जब वे मसीह से जुड़े हैं और संगी वारिस हैं (पद 14,29; रोमि. 4:13; 8:17)।

3:18 जिस तरह से नियमशास्त्र और विश्वास अलग सिद्धान्त हैं (पद 12), उसी तरह से नियमशास्त्र और अब्राहम को दिया हुआ वायदा बिल्कुल फ़र्क हैं। अब्राहम के द्वारा लोगों को आशीष दिए जाने का नियमशास्त्र से कोई सम्बन्ध नहीं था। जब स्वर्गिक पिता एक प्रतिज्ञा देते हैं, लोगों को भरोसा कर के खुश होना चाहिए। नियम और रीति विधि को कर के उनके पूरे होने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।

"विरासत (अधिकार)"- रोमि. 4:13-14; 1 कुरि. 3:22; मत्ती 5:5; इब्रा. 11:8-10; 1 पतर. 1:4. मसीह पर विश्वास लाने वाले पृथ्वी और स्वर्ग के अधिकारी होंगे। जो कुछ मसीह का है, वे उसके हिस्सेदार बनेंगे (इब्रा. 1:2)।

ने उसे अब्राहम को प्रतिज्ञा द्वारा दिया।

19फिर नियमशास्त्र से क्या लाभ है? जब तक वह वंश न आ जाए जिससे प्रतिज्ञा की गयी थी, यह अपराधों के कारण बाद में जोड़ी गयी थी। यह मध्यस्थ और स्वर्गदूतों द्वारा निर्धारित की गयी थी। 20मध्यस्थ एक ही पक्ष के लिए नहीं होता है, लेकिन परमेश्वर के साथ ऐसा है।

21तो क्या नियमशास्त्र परमेश्वर के वायदों के विरोध में है? बिल्कुल नहीं, क्योंकि यदि ऐसा नियमशास्त्र दिया जाता जो जीवन दे सकता, तो धार्मिकता नियमों-आज्ञाओं के पालन करने से मिलती 22वचन (नियमशास्त्र) ने हर एक को शापित किया है जो पाप में हैं, ताकि जो प्रतिज्ञा यीशु मसीह पर विश्वास के फलस्वरूप आती है, उन्हें दी जा सके जो विश्वास करते हैं।

23लेकिन इसके पहले कि विश्वास आए, हमें नियमशास्त्र के आधीन रखा गया था, ताकि प्रगट होने वाले विश्वास के प्रकट होने तक हम उसी की आधीनता में रहें। 24इसलिए नियमशास्त्र हमें मसीह तक लाने के लिए शिक्षक ठहरा जिससे हमें विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराया जा सके। 25किन्तु अब क्योंकि विश्वास आ पहुँचा है, हम शिक्षक के आधीन न रहे।

"दिया"- (1:6) पौलुस जिस तरह से विश्वास के विषय कहता है, उसी "प्रतिज्ञा" के बारे में वैसे ही "व्यवस्था" - के बारे में भी। अपनी कोशिश या मेहनत से ईनाम प्राप्त नहीं किया जाता है (रोमि. 4:4-5; इफ़ि. 2:8-9) । इसे आभार के साथ ग्रहण किया जाना चाहिए।

3:19 जो लोग नियमशास्त्र के मानने वाले थे, उन्हीं को उसके पालन न करने के परिणाम भुगतने पड़े। तो फिर परमेश्वर ने जो लोगों को आशीष देना चाहते हैं, नियमशास्त्र क्यों दिया? रोमि. 3:20; 4:15; 5:20; 7:7 देखें। परमेश्वर ने नियमशास्त्र को खुले में लाकर इसके स्वभाव और इसकी ताकत को दिखा दिया। इसके ज़रिए से वह लोगों को उनके जीवन में यीशु की आवश्यकता को दिखाना माँगते थे। अपनी ज़िन्दगी में यीशु की ज़रूरत को पहचानना और अपना लेना सर्वोत्तम आशीष है।

"तक"- परमेश्वर ने नियमशास्त्र की ज़रूरत का एक समय निश्चित किया था। यह तब तक था जब तक कि मसीह आकर लोगों को मुक्ति न दे दें।

"स्वर्गदूतों"- इब्रा. 2:2; प्रे.काम 7:38,53 देखें। जिस मध्यस्थ के द्वारा नियमशास्त्र आया, वह मूसा था।

3:20-21 यहाँ पौलुस एक संभावित शिकायत का जवाब देना चाहता है - क्योंकि परमेश्वर "एक" हैं (बहुत से तथाकथित ईश्वर कहलाते तो हैं परन्तु बहुत से परमेश्वर नहीं हैं)। पहले अब्राहम को वायदों को देना और फिर नियमशास्त्र देना जो वायदों के विरोध में था, क्यों ऐसा किया? पौलुस कहता है यह तो गलतफ़हमी है। नियमशास्त्र परमेश्वर की आशीषों के खिलाफ़ में नहीं है। लेकिन जब तक लोग मुक्ति के लिए नियमशास्त्र पर भरोसा रखेंगे, तब तक परमेश्वरीय प्रतिज्ञाएँ किसी काम की नहीं रहेगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि नियमशास्त्र न ही आत्मिक जीवन दे सकता है, न ही निर्दोष ठहरा सकता है (रोमि. 7:14; 8:3)।

3:22-23 तुलना करें रोमि. 3:19-24 नियमशास्त्र ही लोगों को दोषी ठहराकर उनके चुने हुए कारावास-(दुष्टता के कारावास) में कैद कर सकता है। कोई व्यक्ति भी इसे अपनी कोशिश, और नियमशास्त्र के पालन, धार्मिक नियमों और रीति विधियों या किसी और तरीके से इस जेल से बच नहीं सकता। मुक्ति, आज़ादी, आत्मिक स्वतन्त्रता और स्वर्गिक पिता की हमेशा की आशीषें सिर्फ़ उनके बनाए गए रास्ते-यीशु पर विश्वास से मिल सकती हैं। (पद 9,14,26; 2:16; रोमि. 1:16-17; 3:22,28; यूहन्ना 3:16,36; 5:24; इफ़ि. 2:8-9)।

3:24 नियमशास्त्र लोगों को अपराधों की माफ़ी न दे सका, लेकिन जब तक मसीह में मुक्ति का रास्ता नहीं खुला, तब तक परमेश्वर ने इसे यहूदियों को अनुशासित करने के लिए इस्तेमाल किया। रोमि. 7:7-14 में देखें कि नियमशास्त्र पौलुस का शिक्षक था।

"विश्वास के आधार पर धर्मी"- 2:16.

3:25 क्योंकि मसीह ने विश्वास के रास्ते को अपने आप में दिखाया, जब लोग मुक्ति के लिए यीशु पर भरोसा कर लेते हैं, मूसा द्वारा दिए नियमशास्त्र का उनके ऊपर कोई हक नहीं है। रोमि. 6:14.

26यीशु पर विश्वास करने से तुम सब
परमेश्वर की संतान हो। 27तुम में से जितनों
ने मसीह में बपतिस्मा पाया है उन्हों ने
मसीह को ओढ़ लिया है। 28अब न कोई
यहूदी है न गैर यहूदी। गुलाम और आज़ाद
में अन्तर नहीं, न ही कोई नर या नारी है।
यीशु मसीह में तुम सभी समान हो, 29यदि
वचन के अनुसार तुम मसीह के हो, तो
अब्राहम का वंश और मीरास के अधिकारी।

4 अब मैं यह कह रहा हूँ कि एक
वारिसदार नाबालिग, जिसका सब
कुछ पर अधिकार है, गुलाम से फ़र्क
नहीं है। 2पिता द्वारा नियुक्त समय तक
वह निगरानी रखने वाले और प्रबन्धक
के आधीन है। 3यहाँ तक कि हम, अपने
बचपन के समय से इस संसार की नींव
की वस्तुओं की गुलामी में थे। 4किन्तु
जब समय पूरा हुआ, परमेश्वर ने स्त्री के
द्वारा अपने पुत्र को भेजा, जो नियम की
आधीनता में उत्पन्न हुआ था। 5ताकि जो
लोग उस नियम की पाबन्दी में थे, उन्हें
अधिकार प्राप्त सन्तान की तरह गोद लिया
जा सके। 6इसलिए कि तुम पिता की सन्तान
ठहरे, उन्हों ने हमारे भीतर अपने बेटे की
आत्मा को भेज दिया, जो "पिता" कहकर

3:26 स्वभाव से लोग परमेश्वर की सन्तान नहीं हैं। हालांकि परमेश्वर सभी लोगों के रचयिता हैं, वह सभी के आत्मिक पिता नहीं हैं (तुलना करें यूहन्ना 8:44)। मसीह में विश्वास ही से लोग स्वर्गिक पिता की सन्तान बनते हैं। यूहन्ना 1:12-13.

3:27 "मसीह में बपतिस्मा"- रोमि. 6:3 के नोट्स देखिए। 'विश्वास' ही लोगों को पिता की सन्तान बनाता है। (पद 26) पानी का बपतिस्मा नहीं, जो भीतरी बदलाव का बाहरी निशान है। परमेश्वर का आत्मा ही मसीह में हमें डुबोता है/जोड़ता है।

"मसीह को ओढ़ लिया"- इसका मतलब है कि स्वर्गिक पिता के सामने मसीह पर ईमान लाने वाले, मसीह की निर्दोषता को ओढ़े हुए खड़े हैं। जैसे यीशु परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य हैं, वैसे ही उनके लोग।

3:28 "तुम सभी समान हो"- 1 कुरि. 12:13; यूहन्ना 17:20-23; कुल. 3:11. परमेश्वर के सामने यीशु के लोगों के बारे में कोई पक्षपात नहीं है। जहाँ तक यीशु का सवाल है, पृष्ठभूमि, मूल, सामाजिक स्थिति, जाति आदि का कोई मतलब नहीं है। जिन लोगों को छोटा और गरीब समझा जाता है, वे मसीह में दूसरों की तरह स्वीकार किए गए हैं।

3:29 पद 7,14,18.

4:1-7 उन दिनों की कुछ रस्मों को पौलुस याद करता है और आत्मिक सच्चाई सिखाने के लिए उनका इस्तेमाल करता है। लड़के विरासत के हकदार थे और जो कुछ पिता का था उन्हीं का था। लेकिन यदि पिता खर्चा उठा सकते थे, तो बच्चों की देखरेख के लिए जब तक वे बड़े न होते थे, किसी व्यक्ति को ज़िम्मेदारी देते थे। जब वे एक निश्चित आयु तक पहुँचते थे, तब उन्हें "बच्चा" नहीं बड़ा समझा जाता था।

पौलुस कह रहा है कि जो लोग नियमशास्त्र के आधीन थे, वे बचपन में (जो नासमझी का समय है) थे, जिससे स्वर्गिक पिता बिल्कुल खुश नहीं थे। यीशु मसीह के पृथ्वी पर आने से परमेश्वर का समय आ गया था कि विश्वासियों को बेटी-बेटा बनने का हक मिले। यीशु मसीह के आने से पहले वे "दुनिया के प्राथमिक सिद्धान्त" (पद 3) या व्यवस्था (नियमशास्त्र) के आधीन थे (पद 5)। अब वे ऐसे 'अभिभावक' या 'देखरेख करने वालों' से मुक्त हो चुके हैं। स्वर्गिक पिता की सन्तान होने की उन्हें पूरी आज़ादी और आशीषें मिल चुकी हैं।

4:4 "समय"- का मतलब है 2000 साल पहले। यहाँ परमेश्वर के बेटे यीशु की तरफ़ इशारा है। वह "एक स्त्री से" - पैदा हुए थे (मत्ती 1:18-21; लूका 1:26-38)। उनके पास सचमुच का मनुष्य स्वभाव था (यूहन्ना 1:14; इब्रा. 2:14. मूसा के नियमशास्त्र के आधीन वह एक यहूदी के रूप में पैदा हुए थे। (जैसा कि सब यहूदी)

4:5 "गोद"- 3:13-14 जब तक लोग यहूदी धर्म के आधीन थे उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार नहीं मिल सकता था।

4:6 3:2,14; रोमि. 8:15 देखें "अब्बा" अरामी भाषा में, पिता के लिए शब्द है।

पुकारता है। 7इसलिए अब तुम गुलाम नहीं, किन्तु बेटे-बेटी हो और यदि बेटे-बेटी हो, तो मसीह के द्वारा वारिसदार भी।

8परन्तु एक समय जब परमेश्वर को नहीं जानते थे, तो स्वभाव से उनके गुलाम थे जो परमेश्वर नहीं था। 9अब जब कि तुम ने परमेश्वर को जान लिया है या उन्हों ने तुम्हें जान लिया है, यह क्या कि तुम उन कमज़ोर और शुरूआत की बातों की चाह करके फिर से उनकी गुलामी में जा रहे हो। 10तुम दिनों, महीनों और अलग-अलग समयों को मानने वाले बन गए हो। 11मुझे यह डर है, कि जो मेहनत मैंने तुम्हारे लिए की है वह बेकार न जाए।

12भाइयो-बहनो, मैं तुम से बिनती करता हूँ कि जैसा मैं तुम्हारे समान बना, तुम भी मेरे समान बन जाओ तुम ने किसी भी तरह से मेरा कुछ नुकसान नहीं किया है। 13तुम यह जानते हो, कि शारीरिक कमज़ोरी की वजह से मैंने पहले तुम्हें सु-संदेश दिया था। 14मेरी देह में मुझे जिस कमज़ोरी को सहना पड़ा उसे न ही तुम ने तुच्छ जाना न खिल्ली उड़ाई, परन्तु मुझे परमेश्वर के स्वर्गदूत के रूप में स्वीकार किया, यहाँ तक कि मुझे मसीह यीशु के समान समझा। 15जिस आशीष के विषय तुम ने कहा, वह

4:7 मसीही विश्वासी गुलाम की तरह नहीं हैं, जिन्हें दबाव में काम करना पड़ता है। वे स्वर्गिक पिता की सन्तान हैं, जिन्हें सब कुछ मुफ़्त में दिया गया है। (1 कुरि. 3:21-23)।

4:8-9 गैर यहूदी विश्वासी पहले झूठे ईश्वरों और मत के बन्धन में थे। अब उन्हें सच्चा ज्ञान मिल गया था। अब वे अपने आप को मूसा के नियमशास्त्र के आधीन लाना चाह रहे थे। यह गुलामी से आज़ादी में आने के बाद फिर से आज़ादी की जगह गुलामी को अपनाना था।

4:10 पौलुस मूसा की व्यवस्था की बात कर रहा है।

"दिनों"- का मतलब है "सब्त", "महीनों" - यहूदी पर्व "वर्षों" - सब्त और जुबली (निर्ग. 20:8; 23:10-11,14-17); लैव्य. 23; 25:8-12)। इन सब को बड़े अच्छे से पूरा करने का मतलब है "कमज़ोर और तुच्छ" सिद्धान्तों को अपनाना (पद 9)। वे दिन आत्मिक बातों की मात्र एक तस्वीर नमूना थे। हमें भी जानना चाहिए कि दिनों को मानने या न मानने से न हम भले बनते हैं न बुरे। विश्वासियों को ऐसा करना ही, उन्हें गुलाम बनाता है और आत्मिक जीवन को खराब भी।

4:11 "मुझे यह डर है"- यहूदियों का पवित्र दिनों को माना जाना, पौलुस के लिए एक अचरज की बात थी। इस से वह जान गया कि यह इस बात का संकेत है कि वे लोग झूठे शिक्षकों के बिगड़े सु-संदेश की तरफ़ मुड़ रहे थे (1:6-7)। वह यह सोच रहा होगा कि उन्हों ने सचमुच में शुभसंदेश को जाना या नहीं।

4:12-20 पौलुस बहुत ज़रूरी सिद्धान्तों के बारे में कह रहा था। अब वह गलातियों के लोगों और स्वयं अपने बीच के सम्बन्ध के विषय कहता है। यहाँ उसका चरवाहे का दिल दिखता है। वे लोग उसके "छोटे बच्चे" हैं। वह उन से प्यार करता है और चाहता है।

"तुम्हारे समान बना"- वे गैरयहूदी थे, इसलिए जब वह सुसमाचार देने गया, वहाँ उनकी तरह हो गया। तुलना करें 1 कुरि. 9:20-23. वह कहता है कि वह उन से इस तरह से बात नहीं करता, जैसा वह है, क्योंकि उन्हों ने व्यक्तिगत तरीके से उसके साथ बुरा बर्ताव किया था। इसके उल्टा, उन अगले पदों में वह दिखाता है, कि आपस में उनका काफ़ी प्यार था।

4:12 "मेरे समान"- पौलुस नियमशास्त्र के हर एक दबाव से छूट चुका था। और सिर्फ़ स्वर्गिक पिता की असीम दया में खुश था। वह चाहता था कि वे इन बातों में उसकी सुनें।

4:13 "शारीरिक कमज़ोरी"- हमें मालूम नहीं कि यहाँ किस तरफ़ इशारा है। क्या यह आँख रोग था (15)? क्या यह 2 कुरि वाला "काँटा"- या? क्या यह बुरे बर्ताव का एक नतीजा था (प्रे.काम 14:19)? कुछ भी साफ़ नहीं मालूम।

4:14 "कमज़ोरी(निर्बलता)"- वे यह सोच सकते थे कि उसकी यह कमज़ोरी परमेश्वर की तरफ़ से एक दण्ड थी इसलिए वे उसे परमेश्वर का संदेशवाहक नहीं मानना चाहते थे। लेकिन ऐसी परीक्षा में वे गिरे नहीं, लेकिन बड़ी इज़्ज़त से स्वागत किया।

4:15 झूठे शिक्षकों की शिक्षा जो उन्हें मूसा के नियमशास्त्र की गुलामी में ला रही थी, पौलुस की खुशी और प्यार को बर्बाद कर रही थी। अपनी कोशिश से मुक्ति हासिल करने का तरीका आनन्द को हमेशा से नाश करने वाला है।

सब कहाँ है? इसलिए कि मैंने तुम्हारे बारे में गवाही दी थी, कि यदि सम्भव होता, तो तुम ने अपनी आँखों को निकालकर दे दिया होता। 16क्या अब मैं तुम्हारा दुश्मन हो गया हूँ, क्योंकि मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ।

17वे तुम्हें फुसला करके तुम्हें अपना दोस्त बनाना चाहते हैं, लेकिन किसी अच्छे उद्देश्य से नहीं, हाँ वे तुम्हें हम से अलग करना माँगते हैं, ताकि तुम बड़ी उमंग से उनकी मानने लगो। 18यह भला है कि किसी अच्छी बात में जोश सदा बना रहे, न केवल तब, जब मैं तुम्हारे साथ हूँ? 19मेरे छोटे बच्चो, जब तक कि मसीह तुम में न बन जाएँ, तब तक मैं जच्चा की सी पीड़ा सहता हूँ, 20मेरी इच्छा है कि तुम्हारे साथ रहूँ और अपने बोलने के तरीके को बदलूँ क्योंकि मैं तुम्हारे विषय उलझन में हूँ।

21मुझे बताओ, तुम जो नियमशास्त्र का पालन करना चाहते हो क्या नियम शास्त्र की नहीं सुनते? 22क्योंकि यह लिखा है कि अब्राहम के दो बेटे थे, एक उसकी दासी से और दूसरा उसकी पत्नी से, 23शरीर की इच्छा से जो बेटा दासी से उत्पन्न हुआ, वह अब्राहम का स्वयं का फ़ैसला था, लेकिन जो उसकी पत्नी से उत्पन्न हुआ, वह परमेश्वर से मिले हुए वायदे के कारण था।

24ये बातें एक प्रतीक हैं, इसलिए कि ये दो वाचाएँ हैं। एक सीनै पर्वत से है जो गुलामी उत्पन्न करती है, यह हाज़िरा है। 25इसलिए कि यह हाज़िरा अरब में सीनै पहाड़ है और वर्तमान के यरूशलेम को दिखाती है, जो अपने बच्चों के साथ

4:16 अच्छा संदेश लोगों को देना, सब से बड़ा काम है। फिर भी अक्सर लोग इसी के लिए हम से नफ़रत करते और नाचीज़ समझते हैं।

4:17-18 "वे"- यह उन झूठे शिक्षकों की तरफ़ इशारा है जो घटिया संदेश दे रहे थे (1:6-7)। ऐसे लोग हमेशा गुटों के अगुवे बनना चाहते हैं और लोगों को अपनी तरफ़ करना माँगते है। रोमि. 16:17-18 से मिलान करें। पौलुस (वह हमारे लिए नमूना है) चाहता था कि लोग परमेश्वर के लिए बोझ रखें। तुलना करें 1 कुरि. 3:4-9,21.

4:19 गलातिया के मसीही लोग पौलुस के बच्चे थे (तुलना करें 1 कुरि. 4:15)। उन्हों ने नया जन्म पाया था (यूहन्ना 3:4-8)। यह उसके उस प्रयास से हुआ था जिसकी तुलना जच्चा की पीड़ा की तरह थी। फिर से वह पीड़ा में है। अब ज़रूरत यह थी कि उन में मसीह बनाए जाएँ। यानि कि जिस तरह यीशु पौलुस में थे, उसी तरह उन में भी दिखायी दें। (3:2,26-29) और 2:20. इस बात की ज़रूरत थी कि वे अपने सोच विचार और कामों में बदल जाएँ। (रोमि. 12:2; 13:14; 2 कुरि. 3:18; इफ़ि. 4:13-15)

4:20 "उलझन"- पद 1:6; 3:11 चिट्ठी से वह कैसे उन से बातचीत करें, वह यही नहीं समझ पा रहा था ।

4:21 "नियमशास्त्र का पालन"- उन में से कुछ लोगों की यह गलती थी। पौलुस को यह मालूम था, कि नियमशास्त्र का अधूरा ज्ञान होने से ऐसा था।

4:22-23 उत्पत्ति 16:1-4; 17:15-16; 21:1-5; रोमि. 4:18-21.

4:24-31 बाईबल हमें अब्राहम उसकी पत्नी सारा और दासी हागार से कुछ आत्मिक बातें सिखाना चाहती है। हम कह सकते हैं कि बाईबल के पहले भाग की बहुत सी बातें मसीह द्वारा शुरू की गयी वाचा का नमूना और तस्वीर हैं। साथ ही हम सावधान रहें जब घटनाओं और दूसरी बातों का अर्थ लगाएँ। परमेश्वर ने अपनी आत्मा से खास प्रेरणा दी और बिना गलती का शिक्षक बनाया। हमारे साथ ऐसा नहीं है। हमारे समय में आज बाईबल के बड़े अजीब और आत्मिक अर्थ लगाए जाते हैं।

4:24-25 हागार सीनै पर्वत पर बाँधी गयी पुरानी वाचा को दिखाती है (निर्ग. 19) साराह मत्ती 26:28 की नयी वाचा को (नया प्रबन्ध) जो यीशु ने बाँधी, दिखाती है। हागार एक दासी लड़की थी। उसकी सन्तान अब्राहम का प्रथम उत्पन्न (रोमि. 9:7-8 देखें) बेटा नहीं हो सकता था। हागार, मूसा द्वारा दिए गए नियमशास्त्र को दिखाती है जो सीनै पहाड़ पर दिया गया था। वह पृथ्वी के यरूशलेम को भी दिखाती है जो पुरानी वाचा के अभ्यास का केन्द्र था। पौलुस के मुताबिक नियमशास्त्र का मतलब है आत्मिक बंधन या गुलामी (पद 1,9; 3:10,23)

गुलामी में है। 26किन्तु यरूशलेम जो ऊपर है, आज़ाद है और हम सब की माँ है। 27क्योंकि लिखा है, "हे बाँझ, तुम जो बच्चे नहीं पैदा करती हो, तुम जिसे प्रसव की पीड़ा नहीं है चिल्लाओ, क्योंकि छोड़ी हुयी की सन्तान सुहागिन की सन्तान से अधिक है।"

28अब भाइयो-बहनो, हम प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। 29जिस तरह से जो देह की इच्छा से उत्पन्न हुआ था, आत्मा से जन्मे हुए को सताता था, वैसा आज भी है। 30बाइबल क्या कहती है? वह यह कि गुलाम औरत और उसके बेटे को निकाल दो, क्योंकि गुलाम औरत का बेटा आज़ाद औरत के बेटे के साथ मीरास का हकदार नहीं होगा। 31इसलिए भाइयो-बहनो, हम गुलाम स्त्री के बच्चे नहीं हैं, लेकिन आज़ाद स्त्री के हैं।

5 जिस आज़ादी के लिए मसीह ने हमें आज़ाद किया है, उसमें मजबूती से बने रहो। गुलामी के बन्धन में बन्धे रहना स्वीकार न करो।

4:26 साराह नयी वाचा और स्वर्गिक यरूशलेम की तरफ़ इशारा है जो नयी वाचा (इब्रा. 12:22) की आत्मिक सच्चाईयों का केन्द्र है। वह कोई गुलामी और बन्धन नहीं है। अब विश्वासी नए यरूशलेम से जुड़े हुए हैं पुराने यरूशलेम से नहीं।

4:27 यशा. 54:1 देखें। यशायाह ने इस्त्राएल के उस महान भविष्य के बारे में बताया है जो मसीह की भलाईयों और उस नए युग का होगा, जिसे वह स्थापित करेंगे। पहले यह बिना फल का था, किन्तु याहवे की कृपा और शक्ति से फलदायी हो जाएगा।

4:28 अब्राहम ने परमेश्वर के वायदे पर भरोसा किया, और उसे इसहाक मिला। अद्‌भुत काम करने वाले, जीवन देने वाले परमेश्वरीय वचन से इसहाक संसार में आया। इसी तरह से विश्वासी नया जीवन पाते हैं और अब्राहम के आत्मिक वंश बन जाते हैं (याकूब 1:18; 1 पतर. 1:23)। यहाँ "वायदा" "प्रतिज्ञा" मूसा के नियमशास्त्र के बिल्कुल उल्टा था।

4:29 उत्पत्ति 21:8-9 देखें। प्रायः जैसे लोग जन्म लेते हैं वैसे इश्माएल उत्पन्न हुआ। उसका जन्म अलौकिक नहीं था। जब इसहाक का पैदा होना असंभव था, परमेश्वर के आत्मा ने ऐसा किया (इब्रा. 11:11-12; रोमि. 4:18-21)। जैसे इश्माएल ने इसहाक को सताया, वैसे ही पुरानी वाचा वाले (यहूदियों) ने नयी वाचा के लोगों (मसीह के लोगों को सताया)। देखें प्रे.काम 5:40; 7:54-58; 13:49-50; 14:19; हर युग में लोग नए जन्में लोगों को सताएँगे।

4:30 "बाइबल"- उत्पत्ति 21:10 आत्मिक मतलब यह है कि जो लोग अपनी कोशिश और नियमशास्त्र से मुक्ति पाना चाहते हैं वे आज़ाद नहीं हैं। परमेश्वरीय कृपा से मुक्ति और आज़ादी पाने वालों के साथ उन्हें कोई जगह भी नहीं है। ये दो फ़र्क रास्ते कभी एक दूसरे से मिलते नहीं हैं। पुरानी वाचा (प्रबन्ध) और नयी वाचा (प्रबन्ध) मिलकर कुछ तीसरा नहीं बना सकते हैं। ऐसी कोई भी कोशिश एक बिगड़ा सुसमाचार बनाते हैं (1:7)।

4:31 इसका मतलब यह हैं कि मसीह में विश्वासियों का मूसा के नियमों, पुराने प्रबन्ध (वाचा) या यहूदी मत से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे नयी वाचा की सन्तान हैं। मसीह के सुसंदेश के वायदों के ज़रिये परमेश्वर की शक्ति से वे नया जन्म पा चुके हैं। पुरानी और नयी वाचाओं की तुलना के लिए देखें -2 कुरि. 3:6-18; इब्रा. 8:6—10:18; 12:18-24.

5:1 कोई भी ऐसी शिक्षा जो रीति विधियों नियमों की कोशिश से मुक्ति की प्रतिज्ञा करती है एक गुलामी का फन्दा (4:3-9) है। यहाँ खास मूसा का नियमशास्त्र उसके दिमाग में था, प्रे.काम 15:10-11 से मिलाएँ। यीशु ने किसी भी ऐसे बोझ से हमको मुक्त किया है। इसका मतलब यह हुआ कि हमको सब तरह के धार्मिक बन्धन से मुक्त किया गया है चाहे वह यहूदी मत का हो, किसी और धर्म या बिगड़ी मसीहत का हो। आज़ाद का मतलब है बिल्कुल आज़ाद। मसीह के अपनाने वालों को चाहिए कि इस आज़ादी की कीमत जानें और हाथ से न जाने दें। वे मसीह के साथ जोड़े गए हैं (मत्ती 11:28-30)। यही जूए (बन्धन) की ज़रूरत उन्हें है। यही बन्धन सच्ची आज़ादी लाता है।

2मैं पौलुस तुम से कहता हूँ, कि यदि तुम
खतना कराओगे, तो मसीह से कोई फ़ायदा
नहीं होगा। 3मैं गंभीरता से हर व्यक्ति
के सामने ऐलान करता हूँ कि जो खतना
करवाता है उसे सभी धार्मिक नियमों को
मानना पड़ेगा। 4तुम जो नियमशास्त्र के
द्वारा खरे या सिद्ध ठहराया जाना चाहते
हो, मसीह तुम से दूर हो गए हैं और तुम
अति महान् कृपा (फ़ज़ल या अनुग्रह) से
गिर चुके हो। 5आत्मा के द्वारा हम उद्धार
के सभी फ़ायदों का इन्तज़ार करते हैं, जो
विश्वास से है। 6यीशु मसीह में न खतना

5:2-12 यहाँ पौलुस साफ़ भाषा में कहता है कि नियमशास्त्र और शर्तहीन कृपा को मिलाना असंभव है। किसी एक को ही चुनना है। वे दोनों को मान नहीं सकते। ऐसा हो नहीं सकता कि कोई अपनी कोशिश- विश्वास और रीति-विधि या बलिदानों से मुक्ति पाए।

5:2 "मैं पौलुस"- पूरे अधिकार के साथ वह बोलता है (1:1) जिसे मसीह से ज्ञान मिला था (1:12)।

"खतना"- उत्पत्ति 17:11-14; प्रका. 12:3. शारीरिक खतना अपने आप में कुछ नहीं है। पौलुस उस स्थिति की बात कर रहा है, जिसमें वे थे। यदि गलातियावासी उन झूठे शिक्षकों की बात मान लेते और खतने की विधि अपना लेते तो मूसा के नियम को मानने से वे नए प्रबन्ध का लाभ हासिल नहीं कर सकते थे। उन्हें मुक्ति देने वाले यीशु या न देने वाले मूसा के नियम को कबूल करना था।

5:3 मतलब यह हुआ कि ऐसे में खतना उन्हें यहूदी मत वाला बनाएगा, जिन्हें मूसा के नियम शास्त्र को मानना ही पड़ेगा। जैसा उसने पहले ही दिखाया था, इस से लाभ नहीं हानि ही होगी (3:10-12)

5:4 "मसीह तुम से दूर हो गए हैं"- इसका मतलब है कि ऐसे लोग अपने आपको उनके जीवन में मसीह को काम करने से अलग रखते हैं। असीम कृपा के दायरे में यीशु क्रियाशील हैं। लेकिन वे लोग उस बड़ी कृपा की तरफ़ अपनी पीठ कर रहे हैं।

"कृपा से गिर चुके"- पौलुस यह नहीं कहता है कि विश्वासी ऐसा करेंगे ही। उसे यह निश्चय था कि गलातिया के विश्वासी हालाँकि कमज़ोर थे, ऐसा कभी नहीं करेंगे (पद 10)। वह इस सिद्धान्त पर ज़ोर डाल रहा हैः नियमशास्त्र और शर्तहीन कृपा को मिलाया नहीं जा सकता। कर्म और विश्वास सिद्धान्तों में कोई सामान्य बात नहीं है। नियमों, रीति विधियों पर आसरा करना कृपा मार्ग के खिलाफ़ जाना है। पौलुस यहाँ यह नहीं कह रहा है कि बुराई में फँसने से मुक्ति को खोया जा सकता है (तुलना करें रोमि. 5:9-10; 8:29-39; 1 यूहन्ना 1:9; 2:1)।

"कृपा से गिर चुके" से उसका अर्थ उन परीक्षाओं से नहीं है जो हम सब के सामने आती हैं। उसका इशारा उस कृपा की तरफ़ है जिससे हमें मुक्ति मिलती है। यह मुमकिन है कि जो वचन में पक्के नहीं हैं वे कुछ समय के लिए झूठे शिक्षकों से भरमाए जाएँ। यह संभव नहीं कि वे हमेशा के लिए मुक्ति के कृपा मार्ग को त्याग दें। यदि ऐसा होता है, तो साफ़ ज़ाहिर है कि वे मसीह के थे ही नहीं (1 यूहन्ना 2:19)। मसीह अपनी भेड़ों को संभालेंगे ओर वे स्थायी रूप से नाश नहीं होंगी। (यूहन्ना 10:27-28; 17:11-12)।

5:5 "हम"- मसीह में सच्चे विश्वासी, जो अपनी कोशिश से मुक्ति के उपाय को नहीं मानते, किसी भी तरह के धार्मिक नियम गुलामी और मौत को लाते हैं। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं (3:18-19) के पूरा होने की आशा, विश्वास उत्पन्न करता है (3:18,29)। रोमि. 8:23-25 से मिलान करें।

"उद्धार...फ़यदों"- फ़ायदा वह 'धार्मिकता' (सिद्धता) नहीं जो विश्वासी को मिला है (2:16; रोमि. 3:21-24; 5:1)। उद्धार की बहुत सी आशीषें भविष्य में हैं।

5:6 6:15; 1 कुरि. 7:19; रोमि. 2:28-29; 4:9-12 देखें। यही बात किसी भी बाहरी रीति-विधि के बारे में सच है। कोई भी बात लोगों को स्वर्गिक पिता के सामने ग्रहणयोग्य नहीं बना सकती। पिता उन्हें विश्वास से बचाते हैं। उसके बाद उन्हें मसीह की आज्ञा (सब से प्रेम यूहन्ना 13:34; 15:2) को मानना चाहिए। यदि हम मसीह पर भरोसा नहीं रखते, उन से प्रेम नहीं करते, तो नियमों रीति विधियों को पूरा करने से क्या फ़ायदा? विश्वास जिससे प्यार उत्पन्न होता है एक महत्वपूर्ण चीज़ ही नहीं, केवल यही ज़रूरी है।

न खतनाहीन कुछ हासिल कर सकता है, लेकिन सिर्फ़ विश्वास जो प्रेम द्वारा प्रेरित है।

7तुम अच्छी दौड़ दौड़ रहे थे। तुम्हें किसने रोक दिया ताकि तुम सत्य को न मानो? 8यह शिक्षा तुम्हें उन से नहीं मिलती है, जिन्होंने तुम्हें बुलाया है। 9थोड़ा सा खमीर पूरे आटे को खमीरा कर देता है। 10मुझे यीशु में तुम पर भरोसा है, कि तुम किसी और शिक्षा को नहीं अपनाओगे। जो तुम्हें परेशान कर रहा है, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, दण्ड पाएगा। 11भाइयो-बहनो, जहाँ तक मेरा सवाल है यदि मैं अभी भी खतने का संदेश देता हूँ, तो मैं सताव क्यों सह रहा हूँ? यदि ऐसा है तो क्रूस से ठोकर लगने की बात ही नहीं रही। 12जो तुम्हें परेशान करते हैं, अच्छा होता कि वे अपने अंग को ही काट डालते।

13भाइयो-बहनो, तुम्हें आज़ादी के लिए अलग किया गया है किन्तु इस आज़ादी को अपनी शारीरिक इच्छा पूरी करने के

5:7 "अच्छी दौड़"- 1 कुरि. 9:24; इब्रा. 12:1.
"तुम्हें...दिया"- 1:7.

5:8 जिन्होंने उन लोगों को बुलाया, वह याहवे परमेश्वर हैं (1:6)। सच्चाई को मानने से जिसने उन लोगों को अलग रखा था, वह परमेश्वर नहीं थे।

5:9 1 कुरि. 5:6-8 देखें। छोटी सी झूठी शिक्षा पूरी मण्डली या डिनॉमिनेशन को खराब कर सकती है।

5:10 उनके दूर होने की चेतावनी देने के बाद (पद 4), वह अपना भरोसा उन पर दिखाता है कि उनके साथ ऐसा नहीं होगा स्वयं प्रभु ने उसे निश्चय दिया था, कि जिस सत्य के बारे में उसने उन्हें लिखा है, उस से वे सहमत होंगे। इब्रा. 6:9 की तुलना इब्रा. 6:4-8 से और इब्रा. 10:39; की इब्रा. 10:26-31 से करें। जहाँ तक झूठे शिक्षक (शिक्षकों) की बात है, जो गुमराह करता है/करते हैं परमेश्वरीय दण्ड के भागीदार है/हैं। मिलाएँ 2 पतर. 2:1-3.

5:11 अगर वहाँ किसी ने कहा होता, कि पौलुस सिखाता है - मुक्ति के लिए खतना ज़रूरी है, तो यह झूठी बात होती।

"सताव"- यहूदी लोग पौलुस को इसलिए सता रहे थे क्योंकि वह सिखाता था- कि मुक्ति के लिए मूसा का नियमशास्त्र ज़रूरी नहीं और मसीहियों के लिए खतने का कोई आत्मिक महत्व नहीं है।

"क्रूस से ठोकर"- 1 कुरि. 1:23 से तुलना करें। यह नाराज़गी क्या होती है? वापस मूसा के नियमशास्त्र की तरफ़ जाने से यह नाराज़गी खतम कैसे हो जाती है? तकलीफ़ लोगों को यह होती है कि मसीह का क्रूस मनुष्य की पाप में पूरी बर्बादी का ऐलान करती है। यह दिखाता है कि लोग इतने बुरे हैं, कमज़ोर हैं, कि अपने काम, कोशिश, धर्म, नियम और प्रार्थनाओं से मुक्ति नहीं पा सकते। वह यह भी ऐलान करता है कि उनकी मात्र आशा उनकी जगह परमेश्वर के बेटे की मौत है।

क्रूस से लोगों के घमण्ड पर चाँटा पड़ता है और वे मसीह के कदमों की धूल पर आ जाते हैं, इसलिए इस से उसमें नाराज़गी आती है। क्रूस से लोगों को तकलीफ़ नहीं होगी, अगर उन से कहा जाए कि मुक्ति के लिए धार्मिक नियमों और प्रथाओं को मानना काफ़ी है। यही बहुत से धार्मिक लोग सुनना माँगते हैं। वे सोचते हैं कि अच्छे-अच्छे काम कर के वे स्वर्गिक पिता को खुश कर सकेंगे। उनके घमण्डी अन्धे मनों को यह शिक्षा अच्छी लगती है।

5:12 "जो तुम्हें परेशान करते हैं"- शिक्षक गलातिया के लोगों को परमेश्वर के सत्य का विरोध करने के लिए उकसा रहे थे। पौलुस का कहना है, ऐसे शिक्षक मूर्ति के मन्दिर के सिर फिरे पण्डितों से अच्छे नहीं हैं, जो अपने शरीर में काटा-पीटी करते हैं।

5:13 इस मसले पर अब पौलुस व्यवहारिकता की बात करता है। यही उसका हमेशा का तरीका है - वह पहले किसी सत्य की नींव रखता है, और फिर मसीह के लोगों से बिनती करता है, कि इसके हिसाब से जीएँ। तुलना करें रोमि. 12:1-2; इफ़ि. 4:1.

"आज़ादी"- मसीह हमको इसलिए आज़ाद नहीं करते, कि हम बुराई में लगे रहें (दुष्टता करना आज़ादी नहीं है लेकिन सब से खतरनाक गुलामी - यूहन्ना 8:34; रोमि. 6:16. यीशु हमें आज़ाद इसलिए करते हैं ताकि हम याहवे परमेश्वर और एक दूसरे के अपने मन से नौकर बन जाएँ) देखे रोमि. 6:15-23.

"शारीरिक इच्छा पूरी करने"- यूनानी में "सार्क्स" की बात पौलुस करता है, स्वभाव से

लिए इस्तेमाल मत करो। इसके बजाए प्रेम से एक दूसरे की सेवा करो। 14पूरे नियमशास्त्र का एक निचोड़ यह हैः "तुम अपने पड़ोसी (दूसरों से) से अपने समान प्रेम रखो" 15किन्तु यदि तुम एक दूसरे को फाड़ खाते हो, तो सतर्क रहो, कि एक दूसरे को खतम न कर डालो।

16इसलिए मैं कहता हूँ आत्मा के द्वारा जीवन जियो तब तुम अपनी इच्छाओं के अनुसार नहीं जीओगे। 17क्योंकि पुराना स्वभाव पवित्र आत्मा के विरोध में इच्छा रखता है और पवित्र आत्मा पुराने स्वभाव के विरोध में। ये एक दूसरे के विरोधी हैं, ताकि तुम वह सब न कर सको, जो तुम चाहते हो। 18किन्तु यदि तुम पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन से जीवन बिताते हो, तो तुम नियमशास्त्र की आधीनता में नहीं हो।

19पुराने स्वभाव के कार्य ये सब हैं,

हम वहीं हैं। देखें रोमि. 7:5,18; 8:3,5. यीशु पर विश्वास करने वाले, नियमशास्त्र से इसलिए आज़ाद नहीं हैं, ताकि अपने दुष्ट कामों में लगे रहें - लेकिन ठीक इसका उल्टा है। देखें (रोमि. 6)।

5:14 क्यों वे नियमशास्त्र को मानना चाहते थे (4:21)? पौलुस कहता है कि नियमों को भूल जाओ, रिवाज़ों को भूल जाओ और नियमशास्त्र का जो निचोड़ है यानि कि प्यार (लैव्य. 19:18; मत्ती 22:39; रोमि. 13:8-10; याकूब 2:8) उसमें लग जाओ। सच देखा जाए तो नियमशास्त्र का निचोड़ उसी में पूरा हो सकता है, जो मसीह पर भरोसा रखते हैं और उनके पास पवित्र आत्मा है (रोमि. 8:4)।

5:15 यहाँ झूठे शिक्षक झगड़े और तोड़ने-फोड़ने का काम कर रहे थे। यह उनके कामों का एक परिणाम था (रोमि. 16:17)। परमेश्वर यह चाहते हैं कि उनके लोग प्यार और सच्चाई में जुड़े हों-ऐसे प्यार में नहीं जहाँ सत्य न हो, न ही ऐसे सत्य में जहाँ प्यार न हो। गलती और झगड़ा कलीसियाओं को बर्बाद कर देते हैं। सत्य और प्रेम उन्हें आत्मिक तरीके से ज़िन्दा और बढ़ता हुआ रखते हैं।

5:16 "जीवन जियो" या "बर्ताव" या "आगे बढ़ना"- यहाँ से 6:10 तक यह पौलुस का विषय है। आत्मा से उसका इशारा पवित्र आत्मा की तरफ़ है। वही है जो मसीहियों को मसीह की तरह जीवन जीने के लिए ताकत देता है। रोमि. 8:4-14 से तुलना करें। पौलुस इन्कार नहीं करता कि बुरे स्वभाव की इच्छाएँ हम में नहीं हैं। रोमि. 7:14-25; 13:14; 1 यूहन्ना 1:8 भी देखें। इन बुरी इच्छाओं को काबू में किया जा सकता है।

5:17 परमेश्वर की आत्मा और इन बुरी इच्छाओं (मनुष्य का पतित पापी स्वभाव) में कुछ भी एकता नहीं है (रोमि. 8:5-8)। हमेशा उन में युद्ध रहेगा। परमेश्वर का आत्मा लगातार इन बुरी इच्छाओं से युद्ध करेगा और इन माँगो को पूरा नहीं करेगा। पौलुस का इन शब्दों "तुम वह सब न कर सको, जो तुम चाहते हो" - मतलब यह हुआ कि मसीह के लोग वह सब अच्छा नहीं करते, जिसे करना चाहते हैं, क्योंकि उनकी पुरानी इच्छाएँ रूकावट डालती हैं (रोमि. 7:15,18,20) इसका मतलब यह भी हो सकता है कि वे बुरी इच्छाओं को तृप्त इसलिए नहीं करते क्योंकि उनके भीतर पवित्र आत्मा उन इच्छाओं का विरोध करता है। दोनों ही बातें हो सकती हैं। यह देखें कि पौलुस यह नहीं सिखाता, कि पृथ्वी पर इन इच्छाओं को निकाल फ़ेंकना एक तरीका है। ऐसा कहीं नहीं लिखा है। वह कुछ और सिखाता है। जीत हासिल करने का तरीका परमेश्वर के आत्मा से जीना है।

5:18 "पवित्र...जीवन"- रोमि. 8:14 देखें। परमेश्वर के आत्मा से बहुत से लोगों को स्वयं की कोशिश से मुक्ति के लिए तरीका बताया है। वापस वह उन्हीं बातों में हमें ढकेलता नहीं है।

"नियमशास्त्र...हो"- रोमि. 6:14 अक्सर लोगों का ख्याल यह है कि इच्छाओं और देह के कामों को दबाने के लिए नियम और रीतियाँ चाहिए। पौलुस को मालूम था कि ऐसी बातें अक्सर गंदी इच्छाओं और बुराई को बढ़ावा देती हैं। देखिये रोमि. 5:5,7-13. वह जानता था कि परमेश्वर के आत्मा ही से हम शरीर की इच्छाओं को मार सकते हैं।

5:19-21 वह अनैतिकता, स्वार्थ, झगड़े, नशे आदि को (हाथ से बने) स्वयं के रचे गलत कार्यों के साथ ही रखता है। आत्मिक लोगों के लिए यह "साफ़ ज़ाहिर" है कि ये बातें भीतर से आती हैं। मिलाएँ मत्ती 15:19; मरकुस 7:21-23; रोमि. 1:29-32; 3:9-18. यहाँ कुछ बातें सीधे लोगों के खिलाफ़ हैं, कुछ परमेश्वर के, कुछ बुरा करने वालों के। वे सभी नुकसान करने वाली और परमेश्वर के गुस्से और इन्साफ़ के लायक हैं।

व्यभिचार, लुचपन, अशुद्धता, दुष्टता, 20मूर्तिपूजा, जादू-टोना, नफ़रत, झगड़े, गलत शिक्षाएँ, ईर्ष्या , क्रोध, हत्या, मतवालापन, 21डाह, लीला-क्रीड़ा और इस तरह के अनेकों काम हैं, जिनके बारे में मैं पहले से बता चुका हूँ। ऐसा करने वाले लोग परमेश्वर के राज्य के हिस्सेदार (वारिस) नहीं हो पायेंगे।

22किन्तु पवित्र आत्मा का फल प्रेम, खुशी, शान्ति, धीरज, सहनशीलता, दयालुता, भलाई, विश्वास, 23नम्रता और संयम है। इन सब के विरोध में कोई व्यवस्था (नियमशास्त्र) नहीं है। 24जो मसीह के हो चुके हैं, उन्होंने अभिलाषाओं और इच्छाओं सहित पुराने स्वभाव को क्रूस पर

5:20 "मूर्तिपूजा"- निर्ग. 20:3-6 आदि।

"जादू-टोना- व्यव. 18:9-12.

"झगड़े" "गलत शिक्षाएँ"- 1:6-7; 1 कुरि. 3:3-4.

"ईर्ष्या"- नीति. 14:30; 27:4; मत्ती 27:18; प्रे.काम 17:5; याकूब 3:14,16.

5:21 "करने वाले"- अभ्यास करते।

"परमेश्वर...(वारिस)"- देखें 6:7-8; 1 कुरि. 6:9-10; इफ़ि. 5:5-6; प्रका. 21:8. इसके बावजूद ऐसे लोग सोचते हैं कि वे चाहे कुछ भी करें, बच जाएँगे। ऐसे लोगों से बचें। उन्हों ने खुद को तो धोखा दिया है और हमें भी देना माँगते हैं। "परमेश्वर के राज्य" (मत्ती 4:17) पर नोट्स देखें।

5:22-23 ये बातें विश्वासी की आत्मा से नहीं निकलती हैं लेकिन विश्वासी के भीतर के पवित्र आत्मा से। ये सब लोगों की कोशिश से नहीं होता है। इसका मतलब यह भी नहीं कि वह हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाए और कुछ न करे। ज़रूर है कि वह पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन को हासिल करे। नहीं तो जीवन में फल नहीं लगेगा। 'फल' शब्द उन्नति की क्रिया को दिखाता है। मत्ती 13:23 से मिलाएँ। यदि हम फल चाहते हैं तो बीज से शुरूआत है। इसके बाद पौधा या पेड़। इसके बाद कली और फूल और आखिर में फल। आत्मिक फल ऐसे ही निकलता है। हम जब यीशु को अपनाते हैं, प्रेम, आनन्द और शान्ति मन में आती है। इन सभी बातों को बढ़ना चाहिए। धीरज ईमानदारी खुद को काबू में रखना, यह सब धीरे-धीरे बढ़ते जाते हैं। तुलना करें 2 पतर. 1:5-8.

इस सूची के सभी गुण हम में हों, यह स्वर्गिक पिता चाहते हैं। पवित्र आत्मा से ऐसा होता भी है। पौलुस प्रेम को सब से ऊपर रखता है। वह जानता था कि यह सब से महान है (पद 6:14; 1 कुरि. 13:13)।

5:22 "खुशी"-यूहन्ना 15:11; 16:20-22; 17:13; रोमि. 5:11; 14:17; 15:13. जिस प्रसन्नता का फ़ायदा लोग उठाते हैं वह अक्सर बाहरी बातों पर निर्भर है। विश्वासियों का आनन्द अनन्तकाल की बातों पर टिका है।

"शान्ति"- लूका 2:14; यूहन्ना 14:27; 16:33; रोमि. 1:7; 14:17; 15:13.

"सहनशीलता"- यूनानी में यह एक शब्द है, इसके दो मतलब हैं। रोमि. 5:3; कुल. 1:11; इब्रा. 6:12; 10:36; 12:1; याकूब 1:3-4.

"दयालुता (कोमलता)"- (यूनानी में यह "सज्जनता" से बेहतर शब्द है) 2 कुरि. 6:6; इफ़ि. 2:7; तीतुस 3:4.

"भलाई"- रोमि. 15:14; इफ़ि. 5:9.

"विश्वास" या "विश्वासयोग्यता"- मत्ती 24:45; 25:21; 1 कुरि. 4:2; 7:25; प्रका. 2:10; 17:14.

5:23 "नम्रता"- मत्ती 11:29; 2 कुरि. 10:1; 1 थिस्स. 2:7.

"संयम"- 2 तीमु. 1:7; 1 कुरि. 9:25,27; 2 पतर. 1:6.

ये सभी गुण परमेश्वर की आत्मा से दिए जाते हैं ताकि हम उन्हें अपने जीवन में रखें। हम खुद उनके लिए रूकावट भी बन सकते हैं और उन्नति के कारण भी।

5:24 यह सभी सच्चे विश्वासियों के साथ होता है। सभी जो मसीह के हैं कुछ ही लोग नहीं। 2:20 में पौलुस मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में कहता है। विश्वासी ने क्या किया है, यहाँ उसके बारे में वह कहता है। वह यह नहीं कहता कि विश्वासी ऐसा करें, लेकिन यह कि उन्हों ने ऐसा किया है। जब उन्हों ने सब से पहले मसीह पर भरोसा किया, ऐसा हो गया।

मन बदलाव का मतलब है उस पुराने जीवन के तरीके से हट जाना जो पुराने बुरे 'स्वयं' के शिकंजे में था। मसीह में विश्वास, अपने लिए उनकी मौत को ग्रहण करता है। दूसरे शब्दों में मन बदलाव की क्रिया और मसीह में विश्वास

चढ़ा दिया है। 25यदि हम पवित्र आत्मा में जीवित
हैं, तो उसी के अनुसार हमारा जीवन जिया जाए।
26हम झूठी प्रशंसा की चाह रखकर एक दूसरे
को न चिढ़ाएँ और न ही एक दूसरे से जलें।

6 भाइयो-बहनो, कोई भी व्यक्ति पाप
में गिर सकता है। तुम आत्मिक लोगों
को चाहिए कि तुम भी सतर्क रहो, ताकि
पाप में न गिरो। पाप में फँस जाने वाले
व्यक्ति को नम्रता से समझाओ। 2एक
दूसरे का बोझ उठाकर मसीह का नियम
पूरा करो। 3यदि कोई व्यक्ति यह सोचे
कि वह कुछ है, जब कि कुछ नहीं है,
तो वह स्वयं को धोखा देता है। 4प्रत्येक
व्यक्ति अपने काम को जाँचे और करके
दिखाए, तब उसे किसी दूसरे के काम में

से हम यह कहते हैं, मसीह को नहीं, मुझे क्रूस पर चढ़ाया जाना चाहिए था। हालाँकि यह विचार शुरू में किसी के मन में नहीं होता है। वे यह मान रहे हैं, कि उनके बुरे स्वभाव के लिए सही जगह क्रूस ही है। वे परमेश्वर के न्याय की घोषणा से सहमत होते हैं।

वे अपना इन्कार कर के अपना क्रूस उठा कर मसीह की ही मानना चाहते हैं (मत्ती 10:38-39; 16:24-26)। नोट्स देखें। यदि लोग ऐसा नहीं करते है तो यह इस बात का सबूत है कि वे सच्चे यीशु के सच्चे अनुयायी नहीं है। पौलुस यहाँ पर सच्चे विश्वासियों की परिभाषा देता है। अगर उन्हों ने अपने दुष्ट स्वभाव को बलि नहीं चढ़ाया है तो वे मसीह के नहीं है।

फिर भी यह अंश पद 16 से हमें यह सोचने पर मजबूर नहीं करता है कि विश्वासियों को पुराने स्वभाव से तकलीफ़ नहीं होगी। पौलुस दिखाता है कि उसके उल्टा ही सत्य है। परमेश्वर और दुष्टता के खिलाफ़ जो रवैया विश्वासियों सा होता है वह यह है - कि उन्हों ने दुष्ट स्वभाव को क्रूस पर वध किया है और मसीह के साथ एक हो गए हैं, जो उनकी जगह पर चढ़ाए गए थे (रोमि. 6:4-7)। आज दो विचार हैं - एक के अनुसार पुराना स्वभाव मर गया और गाड़ा गया दूसरे के अनुसार ऐसा नहीं है। परन्तु विश्वासियों में पापी स्वभाव मरा और दफ़न नहीं हुआ है। वह फिर से उनके जीवन में आना चाहता है (पद 17) इसलिए मसीह कहते हैं हमें "हर रोज़" अपना क्रूस उठाना चाहिये - लूका 9:23.

"पुराने स्वभाव को क्रूस पर चढ़ा दिया"- विश्वासियों के उनके अपने पापी स्वभाव और मसीह के क्रूस के विषय बताता है।

5:25 परमेश्वर के आत्मा ने सभी को आत्मिक जीवन दिया है (यूहन्ना 3:3-8)। क्योंकि यह सच है जहाँ आत्मा अगुवाई करता है, उन्हें जाना चाहिए। पापमय स्वभाव पर जीत के लिए यही एक तरीका है। इसकी एक ही जगह है - वह है क्रूस।

5:26 रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में आत्मा की अगुवाई में जीने की बात पौलुस करता है। पवित्र आत्मा झूठ, झगड़ा और ईर्ष्या को पसन्द नहीं करता। ऐसा ही हमें करना चाहिए।

6:1 "पाप में न गिरो"- जो लोग आत्मिक हैं, उन्हें यह नहीं समझना चाहिए कि वे प्रलोभनों और पाप से अछूते हैं (1 कुरि. 10:12)।

"नम्रता से"- 5:23; 2 तीमु. 2:24-25 - जो व्यक्ति परीक्षा में गिर गया है, उस पर दोष लगाना, कठोर शब्द कहना उसे वापस लेने का तरीका नहीं है। तुलना करें लूका 22:60-62; मरकुस 16:7; यूहन्ना 21:15.

6:2 विश्वासी मूसा के नियमशास्त्र के आधीन नहीं हैं (3:25; 5:1) वे मसीह के नियम के नीचे हैं। यह प्यार का नियम है (यूहन्ना 13:34)। यदि हम अपने संगी विश्वासियों से प्यार करते हैं, तो हम हर एक बात में उनकी मदद करना चाहेंगे जिससे उनका जीवन परेशानी और तंगी का हो जाता है।

6:3 पद 2 को पूरा करने में सब से बड़ी रुकावट झूठ (5:26) है। अगर हमें दूसरों की मदद करनी है, तो खुद की तरफ़ सही रवैया रखना चाहिए। यह सही रवैया लूका 17:10; रोमि. 12:16; 1 कुरि. 3:5-7; फ़िलि. 2:3.

6:4 2 कुरि. 10:12-18 देखें। यदि हम यह सोचते हैं कि हम दूसरे विश्वासियों से बेहतर हैं, या दूसरों की अपेक्षा हमारी सेवकाई अच्छी है, तो हमारे भीतर घमण्ड आएगा और पद 2 पूरा नहीं हो पाएगा।

नहीं लेकिन अपने काम में खुश होने का
मौका मिलेगा। 5क्योंकि हर एक को अपनी
ज़िम्मेदारी खुद पूरी करनी है।
6जो दूसरों से वचन की शिक्षा पाता है वह
सभी अच्छी वस्तुओं को उनके साथ बाँटे।
7धोखे में मत रहना, परमेश्वर को
मज़ाक में नहीं लिया जा सकता, मनुष्य
जो कुछ भी बोता है, वही काटेगा भी।
8जो अपने मन के अनुसार जियेगा, वह
बर्बादी की फ़सल काटेगा। जो पवित्रात्मा
के मार्गदर्शन में चलेगा, वह पवित्र आत्मा
से अनन्तकालिक फ़सल (सदाकाल का
जीवन) पाएगा। 9भलाई करने में हम थक
न जाएँ, क्योंकि यदि हम हिम्मत न हारें, तो
निश्चित समय पर फ़सल देखेंगे। 10इसलिए
जब हमें अवसर मिलता है, सब के साथ
भला व्यवहार करें, विशेषकर उनके साथ
जो विश्वास के घराने के हैं।
11मैंने अपने हाथों से बड़े-बड़े अक्षरों में
किस तरह लिखा है, यह देखो!
12जो लोग खतना करना चाहते हैं, वे
मसीह के क्रूस के कारण आने वाले सताव
से बचना चाहते हैं। 13जो लोग खतना
करवाते हैं, वे भी नियम शास्त्र का पालन
नहीं करते हैं। वे तुम्हारा खतना इसलिए
करवाना चाहते हैं, ताकि तुम्हारे कारण

6:5 प्रत्येक व्यक्ति की अपनी ज़िम्मेदारियाँ हैं और परमेश्वर के प्रति दूसरों के लिए उत्तरदायी है न कि किसी दूसरे के लिए (यूहन्ना 21:21-22; रोमि. 14:12)।

6:6 1 कुरि. 9:9-14; रोमि. 15:26-27; 1 तीमु. 5:17-18 से तुलना करें.

6:7 यह सच्चाई पूरी बाईबल में है- लैव्य. 26:3-17; व्यव. 30:15-18; होशे 8:7; 10:12; नीति. 22:8; भजन 18:25-27; अय्यूब 4:8; 2 कुरि. 9:6.

6:8 जीवन जीने के दो संभावित तरीके हैं: अपने आप को खुश करना या परमेश्वर के आत्मा को खुश करना। एक का अन्त सर्वनाश में है, जैसे होना भी चाहिए। दूसरे का अन्त हमेशा के जीवन में है (5:19-21; रोमि. 2:5-11; 8:5-6,12-14)। पौलुस ने पहले ही से कह दिया कि विश्वासियों ने देह को क्रूसित किया है (5:24)। इसलिए जो अपने बुरे स्वभाव को खुश करता है, वह मसीह में सच्चा विश्वासी नहीं है (हालाँकि यह संभव है कि विश्वासी बुराई में गिरे)।

क्या अनन्त जीवन कुछ ऐसा है जो कुछ करने का परिणाम है? पौलुस जानता था कि यह एक वरदान है (रोमि. 6:23), लेकिन यहाँ दिखाता है कि मीरास एक खास जीवन जीने पर ही हासिल होती है (रोमि. 2:7-10) से तुलना करें। वह कामों से मुक्ति पाने की बात नहीं कर रहा है लेकिन परमेश्वर के आत्मा से बदले जाने वाले जीवन की विश्वासी इस दुनिया में दूसरे लोगों की तरह नहीं है। सिर्फ़ वे ही पवित्र आत्मा के लिए बोते हैं।

6:9 "भलाई करने"- यह एक तरीका है जिससे विश्वासी परमेश्वर के आत्मा को खुश करते हैं। यही एक सबूत भी है कि परमेश्वर का आत्मा उन में है (5:22)। जो कुछ भला, विश्वासी करते हैं, उसका प्रतिफल उन्हें मिलेगा। मत्ती 5:12; 10:42; 25:21; 1 कुरि. 3:14; 15:58; प्रका. 22:12. जो लोग इस संसार में अच्छा करना माँगते हैं, उन्हें बहुत से मौके मिलेंगे। वे हिम्मत खो भी बैठेंगे। पौलुस भविष्य के इनाम के विचारों से लोगों को हिम्मत दिलाता है।

6:10 "सब"- का अर्थ सभी - यहाँ तक कि हमारे दुश्मन भी (मत्ती 5:43-48; लूका 6:35; रोमि. 12:20-21)।

6:11 "बड़े-बड़े अक्षरों"- क्या पौलुस ने बड़े अक्षरों से इसलिए लिखा क्योंकि उसकी आँखों में कुछ खराबी थी? या इसलिए क्योंकि उस बात पर ज़ोर डाल रहा था, या इसलिए कि जो लिखने जा रहा था, उस पर ज़ोर डालना चाहता था। हमें नहीं मालूम।

6:12 वहाँ पर झूठे शिक्षक लोगों को खुश करने की कोशिश कर रहे थे। अपनी योग्यता और जोश से यहूदियों से इज़्ज़त चाह रहे थे। वे "क्रूस की नाराज़गी" को सहन नहीं करना चाहते थे (5:11)। कुछ नाम के मसीह के सेवक मशहूर होने के लिए और सताव से बचने के लिए कुछ भी कर सकते थे। तुलना करें 1:10.

6:13 "पालन"- रोमि. 2:17-24. एक भी झूठा शिक्षक पूरी तरह से मूसा के नियमशास्त्र का पालन नहीं करता था।

घमण्ड कर सकें। 14लेकिन परमेश्वर करे, कि मैं यीशु मसीह के क्रूस को छोड़कर किसी और बात का घमण्ड न करूँ, जिसके कारण मेरे लिए संसार क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है और मैं संसार के लिए। 15इसलिए कि मसीह में न खतना और न खतना रहित का कुछ अर्थ है, किन्तु एक नयी सृष्टि। 16उन लोगों को और शान्ति और अनुग्रह (कृपा) मिले, जो इस नियम पर चलते हैं। परमेश्वर के इस्राएल को भी।

17अब से कोई मुझे परेशान न करे, क्योंकि मैं अपनी देह पर यीशु मसीह के दागों को सहता हूँ।

18भाइयो-बहनो प्रभु यीशु मसीह की असीम कृपा (अनुग्रह) तुम्हारी आत्माओं के साथ हो। ऐसा होता रहे।

"घमण्ड"- यह घमण्ड कि उन्हों ने अपने ख्याल वाले मसीही पैदा किए थे।

6:14 "क्रूस"- घमण्ड का एक आधार था। यह उसमें और उसके किए गए काम में नहीं, लेकिन अपराधियों के लिए यीशु के मरने में था। तुलना करें रोमि. 3:27; इफ़ि. 2:9. हम उन से सतर्क रहें जो इन बातों में पौलुस को नमूना नहीं बनाते हैं, लेकिन अपने ऊपर या अपने कामों पर घमण्ड करते हैं, वे उनके चरित्र को दिखाते हैं।

"क्रूस पर चढ़ाया जा चुका"- 2:20; 5:24 यहाँ "दुनिया" से मतलब "ये बुरा युग (संसार)" 1:4. इसका मतलब है दुष्ट संसार - वह सब जिसे लोग चाहते हैं और घमण्ड करते हैं। यूहन्ना 1:10; 7:7; 17:14; रोमि. 12:2; 1 यूहन्ना 2:15-17; 5:19 से तुलना करें।

पौलुस इस गंदे संसार से कुछ नहीं चाहता था। उसके लिए वह मरा हुआ था। वह इसके लिए मर गया था। दुनिया उसे बेवकूफ़ समझती थी। मसीह की मौत की वजह से दुनिया और उस में एक बड़ी खाई थी। दुनिया ने मसीह को मार डाला - मसीह के हत्यारों से पौलुस को क्या लेना देना? गलातियों में क्रूसित शब्द विश्वासी के संदर्भ में कैसे इस्तेमाल किया गया, यह देखें "मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया" (2:20), पुराने स्वभाव को क्रूस पर चढ़ा दिया (5:24) संसार के लिए क्रूस पर चढ़ा दिया (6:14) ।

6:15 "एक नयी सृष्टि"- 2 कुरि. 5:17. खास बात है भीतरी व्यक्ति का बदलाव या नया आत्मिक जीवन न कि रीति विधि और ऐसे धार्मिक नियम, जिनको यहूदी माना करते थे। यदि हम ने नया जन्म (मुक्ति के लिए यीशु पर भरोसा) नहीं पाया है (यूहन्ना 3:3-8), बाहरी बातों का कोई फ़ायदा नहीं है। अगर हम ने नया जन्म पाया है, ज़रूरी है कि हम उन्हें न अपनाएँ ।

6:16 "इस नियम"- यानि कि 14,15 पद में दिए गए नियम।

"परमेश्वर के इस्त्राएल"- "इस्त्राएल" से पौलुस का मतलब वे यहूदी हैं, जिन्होंने कर्म मार्ग को त्याग दिया है और मसीह पर भरोसा रखा है। वे सच्चे इस्त्राएली हैं। रोमि. 2:28-29; 9:6; 11:1-7. न्यू टैस्टॉमैन्ट में विश्वास में आए हुए यहूदियों और गैरयहूदियों को, परमेश्वर का इस्त्राएल कभी नहीं कहा गया था।

6:17 पौलुस मसीही लोगों से बिनती करता है कि वे उसकी शिक्षा को अपनाएँ। गलत शिक्षा को छोड़ें और उसे परेशान न करें।

"यीशु मसीह के दाग"- शायद वह उन दागों की तरफ़ इशारा कर रहा है, जो उसकी देह में मसीह सेवा के कारण थे - 2 कुरि. 1:5; 11:23-25; कुल. 1:24.

6:18 जैसे पौलुस ने चिट्ठी को शुरू किया था वैसे ही वह "असीम कृपा" के साथ अन्त भी करता है। यह उनको याद दिलाया जाना था कि हर एक भलाई जो वे अपने जीवन में देखते हैं खासकर आत्मा से जुड़ी हुयी, सभी मसीह की बड़ी कृपा से हैं।